गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 238
दि. 29.12.2025,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

अंतरिक्ष शक्ति को नई उड़ान: श्रीहरिकोटा में तीसरे लॉन्च पैड से इसरो के महा-मिशनों की तैयारी

(जीएनएस)। चेन्नई। भारत की अंतरिक्ष यात्रा अब एक नए और निर्णायक मोड़ पर खड़ी दिखाई दे रही है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो देश की बढ़ती वैज्ञानिक, सामरिक और व्यावसायिक अंतरिक्ष जरूरतों को देखते हुए अपने बुनियादी ढांचे का बड़ा विस्तार करने जा रहा है। आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र में तीसरे प्रक्षेपण पैड के निर्माण की योजना को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है। इसरो का लक्ष्य है कि अगले चार वर्षों के भीतर यह नया लॉन्च पैड पूरी तरह तैयार होकर संचालन में आ जाए, ताकि भविष्य के भारी और जटिल अंतरिक्ष अभियानों को निर्बाध रूप से अंजाम दिया जा सके। अब तक श्रीहरिकोटा में मौजूद दो लॉन्च पैड भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की रीढ़ रहे हैं। इन्हीं से पीएसएलवी, जीएसएलवी और एलवीएम3 जैसे प्रक्षेपण यानों ने सैकड़ों सफल उड़ानें भरी हैं। लेकिन आने वाला समय केवल छोटे और मध्यम उपग्रहों का नहीं है। वैश्विक स्तर पर संचार, निगरानी, मौसम विज्ञान, रक्षा और अंतरग्रहीय अभियानों के लिए बड़े और भारी उपग्रहों की मांग तेजी से बढ़ रही है। इसरो भी अब 12,000 से 14,000 किलोग्राम या उससे अधिक वजन वाले उपग्रहों को विभिन्न कक्षाओं में स्थापित करने की तैयारी कर रहा है। ऐसे में मौजूदा लॉन्च पैड की क्षमताएं भविष्य की जरूरतों के लिहाज से सीमित साबित हो सकती हैं, इसी कारण तीसरे लॉन्च पैड की आवश्यकता महसूस की गई।

सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के निदेशक पद्मकुमार ईएस के अनुसार, यह नया लॉन्च पैड केवल एक अतिरिक्त ढांचा नहीं होगा, बल्कि आने वाली पीढ़ी के प्रक्षेपण यानों और अभियानों के लिए पूरी

तरह अनुकूलित होगा। इसरो फिलहाल जिन अगली पीढ़ी के प्रक्षेपण यानों पर काम कर रहा है, उनमें एनजीएलवी यानी नेक्स्ट जेनरेशन लॉन्च व्हीकल प्रमुख है। यह प्रक्षेपण यान न केवल अधिक भार उठाने में सक्षम होगा, बल्कि लागत और पुनः उपयोग के लिहाज से भी क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है। तीसरा लॉन्च पैड इन्हीं एनजीएलवी अभियानों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया जाएगा। मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम के संदर्भ में भी यह विस्तार बेहद अहम माना जा रहा है। गगनयान मिशन के बाद भारत की मानव अंतरिक्ष उड़ान क्षमताओं को और आगे बढ़ाने की योजना है। भविष्य में लंबे समय तक चलने वाले मानव मिशन, अंतरिक्ष स्टेशन से जुड़ी योजनाएं और मानव रहित गहरे अंतरिक्ष अभियानों के लिए एक मजबूत और बहु-उपयोगी प्रक्षेपण ढांचे की जरूरत होगी। तीसरा लॉन्च पैड इस दिशा में इसरो को तकनीकी और परिचालन दोनों स्तरों पर बड़ी मजबूती देगा। इसरो की हालिया उपलब्धियां इस बात का संकेत हैं कि संगठन अब भारी अभियानों के लिए पूरी तरह तैयार हो रहा है। 24 दिसंबर को एलवीएम3-एम6 रॉकेट के जरिए लगभग 6,000 किलोग्राम वजनी अमेरिकी उपग्रह 'ब्लू बर्ड ब्लॉक-2' को पृथ्वी की निम्न कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित किया गया। यह अब तक भारत से प्रक्षेपित किया गया सबसे भारी उपग्रह था और इसने इसरो की क्षमताओं का नया प्रदर्शन किया। विशेषज्ञों का मानना है कि यह सिर्फ एक शुरुआत है और आने वाले वर्षों में इससे कहीं अधिक वजन वाले उपग्रह भारत से लॉन्च किए जाएंगे।

तीसरे लॉन्च पैड के निर्माण के साथ-साथ इसरो अपने प्रक्षेपण नेटवर्क को भी विविधता दे रहा है। तमिलनाडु के कुलसेकरपट्टिनम में निर्माणाधीन नया प्रक्षेपण केंद्र इसका उदाहरण है। यह केंद्र खासतौर पर लघु उपग्रह प्रक्षेपण यानों यानी एसएसएलवी के लिए विकसित किया जा रहा है। यहां से करीब 500 किलोग्राम तक वजन वाले छोटे उपग्रहों को निम्न कक्षा में भेजा जाएगा। इसका फायदा यह होगा कि श्रीहरिकोटा पर दबाव कम होगा और छोटे तथा बड़े अभियानों के लिए अलग-अलग केंद्र उपलब्ध होंगे। इससे प्रक्षेपण की संख्या बढ़ेगी और भारत वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में और अधिक प्रतिस्पर्धी बन सकेगा।

इसरो का यह विस्तार सिर्फ तकनीकी या वैज्ञानिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि इसका आर्थिक और रणनीतिक महत्व भी गहरा है। अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी कंपनियों की भागीदारी बढ़ रही है और भारत अब एक उभरते हुए स्पेस हब के रूप में देखा जा रहा है। तीसरे लॉन्च पैड से प्रक्षेपण क्षमता बढ़ने पर भारत विदेशी उपग्रहों के प्रक्षेपण से अधिक राजस्व अर्जित कर सकेगा। साथ ही, रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े अभियानों में भी आत्मनिर्भरता को मजबूती मिलेगी।

श्रीहरिकोटा का इतिहास भी इस विस्तार को एक खास संदर्भ देता है। 1971 में यहीं से रोहिणी-125 रॉकेट का प्रक्षेपण कर भारत ने अंतरिक्ष युग में कदम रखा था। 2002 में इस केंद्र का नामकरण महान वैज्ञानिक सतीश धवन के नाम पर किया गया। तब से लेकर आज तक यही केंद्र भारत के लगभग सभी प्रमुख अंतरिक्ष अभियानों का गवाह रहा है। अब तीसरे लॉन्च पैड के निर्माण के साथ यह केंद्र एक बार फिर इतिहास के नए अध्याय की ओर बढ़ रहा है।

विशेषज्ञों का मानना है कि अगले चार वर्षों में जब यह नया लॉन्च पैड पूरी तरह तैयार हो जाएगा, तब भारत की प्रक्षेपण क्षमता में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरह का बड़ा उछाल देखने को मिलेगा। इससे न केवल इसरो को अपने महत्वाकांक्षी मिशनों को बेहतर ढंग से अंजाम देने में मदद मिलेगी, बल्कि भारत वैश्विक अंतरिक्ष महाशक्तियों की पंक्ति में और मजबूती से खड़ा नजर आएगा। तीसरा लॉन्च पैड दरअसल भारत के उस सपने का प्रतीक है, जिसमें अंतरिक्ष केवल वैज्ञानिक खोज का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास और वैश्विक नेतृत्व का भी आधार बनता जा रहा है।

बारामती में गौतम अदानी का बयान: शरद पवार को मेंटोर बताकर महाराष्ट्र राजनीति में पैदा हुआ नया सियासी तूफान

(जीएनएस)। पुणे/बारामती। महाराष्ट्र की राजनीति में नगर निगम और महानगरपालिका चुनावों की सरगर्मी के बीच बारामती से आए गौतम अदानी के बयान ने सियासी गलियारों में हलचल बढ़ा दी है। अदानी समूह के अध्यक्ष गौतम अदानी ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकां) के वरिष्ठ नेता शरद पवार को अपना मेंटोर बताते हुए कहा कि वे लगभग तीन दशकों से पवार से मार्गदर्शन पा रहे हैं और इसे अपने जीवन का सौभाग्य मानते हैं। यह बयान ऐसे समय में आया है जब राज्य में राजनीतिक गठबंधनों, सीट बंटवारे और स्थानीय समीकरणों को लेकर चर्चा चरम पर है, और यह बयान स्थानीय और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर नई चर्चाओं को जन्म दे रहा है। बारामती के विद्या प्रतिष्ठान में स्थापित 'शरद पवार सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' के उद्घाटन समारोह में गौतम अदानी ने मंच से खुलकर शरद पवार की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि पवार ने महाराष्ट्र और देश के कृषि, सहकारिता और उद्यमिता क्षेत्रों में दूरदर्शी नेतृत्व प्रदान किया है। अदानी ने बारामती के विकास

को नीति और सोच का मॉडल बताते हुए कहा कि यह केवल निर्माण और परियोजनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से एक मिसाल है। समारोह की एक प्रमुख राजनीतिक विशेषता यह रही कि लंबे समय बाद पवार परिवार के लगभग सभी प्रमुख सदस्य एक ही मंच पर मौजूद थे। शरद पवार, उपमुख्यमंत्री अजीत पवार, सुप्रिया सुले, रोहित पवार, सुनेत्रा पवार, प्रताप पवार और राजेंद्र पवार की एक साथ उपस्थिति ने राजनीतिक विशेषज्ञों को भविष्य के गठबंधनों और रणनीतियों के संकेत देने वाला मामला प्रतीत किया। इसके अलावा, अदानी का कार्यक्रम स्थल तक पहुंचना और उपमुख्यमंत्री अजीत पवार व विधायक रोहित पवार के साथ एक ही कार में आगमन भी राजनीतिक संकेतों के तौर पर देखा जा रहा है। अदानी ने अपने संबोधन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को भविष्य की औद्योगिक क्रांति के रूप में पेश किया। उन्होंने कहा कि एआई मानव क्षमताओं का विस्तार करेगा और नए अवसर पैदा करेगा, लेकिन भारत को इस तकनीक में आत्मनिर्भर होना चाहिए। उन्होंने चेताया कि अन्य देशों के एल्गोरिदम और तकनीकी नियंत्रण पर निर्भर रहना देश के लिए जोखिमपूर्ण हो सकता है और डेटा सुरक्षा एवं निर्णय क्षमता पर खतरा उत्पन्न कर सकता है। अदानी ने बताया कि बारामती का एआई सेंटर कृषि, स्वास्थ्य और स्टार्टअप्स में नवाचार को बढ़ावा देगा और युवाओं को नई दिशा देगा। शरद पवार ने भी मंच से गौतम अदानी की सराहना की। पवार ने कहा कि अदानी ने शून्य से शुरुआत कर देश के सबसे बड़े औद्योगिक समूहों में से एक का निर्माण किया है। उन्होंने यह भी कहा कि उद्योग और शिक्षा के बीच सहयोग से ही भविष्य की चुनौतियों का सामना संभव है और एआई सेंटर इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। कार्यक्रम के बाद राजनीतिक प्रतिक्रियाएं तेज हो गईं। राकां सांसद सुप्रिया सुले ने कहा कि गौतम अदानी उनके लिए केवल एक उद्योगपति नहीं, बल्कि भाई समान हैं और उनका रिश्ता पारिवारिक और व्यक्तिगत रूप से मजबूत है। इस बयान ने राजनीतिक गलियारों में नई चर्चा को जन्म दिया। वहीं, शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि पवार और अदानी के संबंध व्यक्तिगत हैं और किसी कार्यक्रम में किसे बुलाना यह उनका निजी अधिकार है।

अल्पसंख्यकों की स्थिति पर भारत की चिंता से बौखला उठा बांग्लादेश, सरकार ने आरोपों को बताया भ्रामक

(जीएनएस)। ढाका। भारत द्वारा बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा और स्थिति को लेकर जताई गई चिंता ने पड़ोसी देश को नाराज़ कर दिया है। बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय ने भारत के विदेश मंत्रालय प्रवक्ता की टिप्पणियों को 'तथ्यहीन और भ्रामक' करार देते हुए कहा कि देश में किसी विशेष समुदाय के खिलाफ संगठित उत्पीड़न का कोई प्रमाण नहीं है। ढाका ने स्पष्ट किया कि बांग्लादेश में सभी समुदायों के बीच लंबे समय से भाईचारा और सह-अस्तित्व की परंपरा रही है और हालिया घटनाओं को गलत तरीके से पेश किया जा रहा है।

बांग्लादेश सरकार ने बयान में आरोप लगाया कि कुछ आपराधिक घटनाओं को जानबूझकर हिंदू अल्पसंख्यकों के खिलाफ बड़े पैमाने पर उत्पीड़न के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि ऐसे दावे भारत के कुछ हिस्सों में बांग्लादेश विरोधी माहौल बनाने और आम जनता को देश तथा उसके संस्थानों के खिलाफ भड़काने के प्रयास के रूप में देखे जा रहे हैं।

ढाका ने एक विशेष मामले का उदाहरण देते हुए बताया कि जिस व्यक्ति की मौत का जिक्र भारत में किया गया, वह एक नामजद अपराधी था। सरकार ने कहा कि उस व्यक्ति की मौत उस समय हुई जब वह अपने मुस्लिम साथी के साथ जबरन वसूली कर रहा था। उसके साथी को बाद में गिरफ्तार कर लिया गया। इस घटना को अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा से जोड़ना पूरी तरह गलत और भ्रामक है।

बांग्लादेश ने भारत के सभी संबंधित पक्षों से अपील की कि वे किसी भी प्रकार के भ्रामक और असत्य दावों से बचें ताकि दोनों देशों के बीच लंबे समय से बने अच्छे पड़ोसी संबंधों और आपसी भरोसे को कोई नुकसान न पहुंचे। सरकार ने दोहराया कि वह देश में सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है और सभी समुदायों के बीच शांति और भाईचारे को मजबूत करने के प्रयास लगातार जारी रहेंगे।

विशेषज्ञों का कहना है कि यह विवाद दोनों देशों के बीच राजनयिक संवेदनाओं और मीडिया रिपोर्टिंग के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौती को दर्शाता है। जबकि भारत अपनी अंतरराष्ट्रीय छवि और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर ध्यान देने का प्रयास करता है, बांग्लादेश इसे देश की आंतरिक सुरक्षा और सांप्रदायिक सौहार्द के मामले में हस्तक्षेप के रूप में देख रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि आने वाले समय में दोनों देशों को आपसी विश्वास और स्पष्ट संवाद के जरिए इन मतभेदों को कम करना होगा।

'मन की बात' से जनचेतना तक: प्रधानमंत्री मोदी के विचारों को जीवन का संकल्प बनाने का आह्वान

(जीएनएस)। नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' को समाज के हर वर्ग के लिए प्रेरणा और दिशा देने वाला बताते हुए भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नवीन ने कहा है कि यह कार्यक्रम केवल सुनने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसके विचारों और संदेशों को अपने जीवन और कार्य में उतारना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे 'मन की बात' में सामने आने वाले अनुभवों, उदाहरणों और विचारों को अपने आचरण में शामिल कर समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं। नितिन नवीन रविवार को दिल्ली के ओल्ड राजेंद्र नगर स्थित सिंधु समाज में पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ 'मन की बात' कार्यक्रम की 129वीं कड़ी सुनने के बाद उन्हें संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी का यह कार्यक्रम राजनीति से ऊपर उठकर आम लोगों से जुड़ने का माध्यम है। इसमें देश के कोने-कोने से आई उन कहानियों को मंच मिलता है, जो सामान्य होते हुए भी असाधारण प्रेरणा देती हैं। उन्होंने कहा कि 'मन की बात' किसी दल या विचारधारा का प्रचार नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक सोच, नवाचार, सेवा और जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करने का प्रयास है।

नितिन नवीन ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी हर बार कार्यक्रम में ऐसे लोगों का उल्लेख करते हैं, जो बिना किसी बड़े मंच या प्रचार के अपने स्तर पर समाज और देश के लिए योगदान दे रहे हैं। कभी यह कहानी किसी किसान की होती है, जो नई तकनीक से खेती में बदलाव ला रहा है, तो कभी किसी युवा की, जो स्टार्टअप या सामाजिक पहल के जरिए रोजगार और अवसर पैदा कर रहा है। कभी स्वच्छता अभियान की बात होती है, तो कभी पर्यावरण संरक्षण, जल बचाव, महिला सशक्तिकरण या स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने की। ये सभी विषय इस बात का संकेत हैं कि राष्ट्र निर्माण केवल सरकारों से नहीं, बल्कि समाज के हर व्यक्ति की भागीदारी से संभव है।

उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि भाजपा कार्यकर्ता होने का अर्थ केवल चुनावी राजनीति तक सीमित रहना नहीं है। कार्यकर्ताओं की असली पहचान समाज में उनके व्यवहार, सेवा और योगदान से बनती है। 'मन की बात' में जो विचार सामने आते हैं, वे कार्यकर्ताओं के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत हो सकते हैं। अगर कोई प्रधानमंत्री रेडियो के माध्यम से देश के नागरिकों से सीधे संवाद कर रहा है, तो उसका उद्देश्य यही है कि लोग अपने भीतर सकारात्मक बदलाव लाएं और अपने आसपास के वातावरण को बेहतर बनाने में भूमिका निभाएं। नितिन नवीन ने यह भी कहा कि आज के समय में जब समाज कई तरह की चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब ऐसे कार्यक्रमों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। उन्होंने कहा कि 'मन की बात' उम्मीद जगाने वाला मंच है, जो यह भरोसा दिलाता है कि हर नागरिक, चाहे वह किसी भी वर्ग या क्षेत्र से हो, देश के विकास में योगदान दे सकता है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि वे प्रधानमंत्री के संदेशों को गांव-गांव, मोहल्लों और समाज के अलग-अलग वर्गों तक पहुंचाएं, ताकि प्रेरणा की यह श्रृंखला और मजबूत हो। इस अवसर पर उन्होंने राष्ट्र की सेवा में ईमानदारी, समर्पण और अनुशासन को सबसे बड़ा मूल्य बताया।

शेयर बाजार में मुनाफे का झांसा देकर 8 करोड़ की साइबर ठगी, बगहा से खुला संगठित डिजिटल अपराध का जाल

(जीएनएस)। पश्चिम चम्पारण/बगहा। शेयर बाजार में निवेश कर कम समय में मोटा मुनाफा दिलाने का सपना दिखाकर लोगों से करोड़ों रुपये ऐंठने वाले एक बड़े संगठित साइबर गिरोह का बगहा में पुलिस ने पर्दाफाश किया है। साइबर थाना में दर्ज मामले की जांच के दौरान यह चौंकाने वाला खुलासा हुआ है कि ठगों ने सुनियोजित और तकनीकी तरीके से करीब आठ करोड़ रुपये की ठगी को अंजाम दिया। इस मामले में अब तक दो आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है, जबकि पुलिस पूरे नेटवर्क, उससे जुड़े बैंक खातों और अन्य संभावित आरोपियों की गहन जांच में जुटी हुई है।

प्रभारी पुलिस अधीक्षक निर्मला कुमारी ने प्रेस रिलीज जारी कर बताया कि पीड़ित के आवेदन के आधार पर साइबर थाना कांड संख्या 24/25 दर्ज किया गया था। शुरुआती जांच में मामला सामान्य ऑनलाइन ठगी का प्रतीत हो रहा था, लेकिन जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ी, वैसे-वैसे यह स्पष्ट होता गया कि यह एक संगठित और सुनियोजित साइबर अपराध है, जिसमें आधुनिक तकनीक, फर्जी निवेश प्लेटफॉर्म और बैंकिंग प्रणाली की खामियों का बखूबी इस्तेमाल किया गया। पुलिस के अनुसार, ठगों ने खुद को शेयर बाजार के विशेषज्ञ और निवेश सलाहकार बताकर लोगों का विश्वास जीता और उन्हें आकर्षक रिटर्न का लालच देकर बड़ी रकम निवेश करने के लिए प्रेरित किया।

जांच में यह भी सामने आया है कि ठगी की गई रकम को एक ही बैंक खाते में रखने के बजाय बेहद चालाकी से कई खातों में घुमाया गया। इस पूरी प्रक्रिया को 'लेयरिंग सिस्टम' के तहत अंजाम दिया गया, ताकि पैसों की असली ट्रेल टूट जाए और जांच एजेंसियों को भ्रमित किया जा सके। पहले चरण में निवेशकों से सीधे पैसे मंगवाए गए और उसके बाद रकम को अलग-अलग खातों में ट्रांसफर कर दिया गया। कुछ ही समय में पैसा कई खातों से होकर गुजर जाता था, जिससे यह पता लगाना मुश्किल हो जाए कि असली लाभार्थी कौन है।

पुलिस का कहना है कि इस गिरोह ने सोशल मीडिया, मैसेजिंग ऐप और कॉल के जरिए लोगों को निशाना बनाया। पेशेवर भाषा, फर्जी ग्राफ और नकली मुनाफे के स्क्रीनशॉट दिखाकर निवेशकों को यह भरोसा दिलाया जाता था कि उनका पैसा सुरक्षित है और लगातार बढ़ रहा है। शुरुआती दौर में कुछ निवेशकों को मामूली रकम का रिटर्न भी दिया गया, ताकि उनका भरोसा और मजबूत हो सके। इसके बाद उनसे और अधिक निवेश करने को कहा गया और यहीं से ठगी का बड़ा खेल शुरू हो गया।

प्रभारी एसपी ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ में कई अहम सुराग मिले हैं। पुलिस अब उन सभी बैंक खातों, मोबाइल नंबरों और डिजिटल प्लेटफॉर्म की जांच कर रही है, जिनका इस्तेमाल ठगी में किया गया। साथ ही यह भी पता लगाया जा रहा है कि इस गिरोह के तार किन-किन राज्यों से जुड़े हैं और क्या इसमें कोई अंतरराज्यीय या अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क भी सक्रिय है। साइबर विशेषज्ञों की मदद से डिजिटल साक्ष्यों को खंगाला जा रहा है, ताकि पूरे नेटवर्क को जड़ से तोड़ा जा सके।

पुलिस ने आम लोगों से अपील की है कि वे शेयर बाजार या किसी भी निवेश योजना में पैसा लगाने से पहले पूरी जांच-पड़ताल करें और किसी अनजान कॉल, मैसेज या सोशल मीडिया लिंक पर भरोसा न करें।

संपादकीय

संगठन की शक्ति का दिग्विजय ने किया जिक्र, पार्टी नेतृत्व को दिया संदेश

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने लालकृष्ण आडवाणी और नरेन्द्र मोदी की एक पुरानी तस्वीर पोस्ट कर जिस तरह यह लिखा कि आरएसएस का एक स्वयंसेवक एवं भाजपा का जमीनी कार्यकर्ता जमीन पर बैठकर मुख्यमंत्री और फिर प्रधानमंत्री बना, उस पर चर्चा होना स्वाभाविक है। इसलिए और भी अधिक, क्योंकि उन्होंने इस फोटो के साथ अपने मन की बात उस समय साझा की, जब कांग्रेस कार्य समिति की बैठक चल रही थी।

उन्होंने उक्त फोटो को प्रभावशाली बताते हुए उसे संगठन की शक्ति का परिचायक भी कहा। उल्लेखनीय केवल यह नहीं कि उन्हें संगठन की शक्ति बताने के लिए यही फोटो उपयुक्त लगी, बल्कि यह भी है कि उन्होंने अपनी पोस्ट को मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी के साथ प्रधानमंत्री मोदी को भी टैग किया।

हालांकि इस पोस्ट को लेकर चर्चा का बाजार गर्म होने पर उन्होंने सफाई दी कि मैंने केवल संगठन की तारीफ की है और मैं तो आरएसएस और मोदी जी का घोर विरोधी हूं, लेकिन उनकी बात से यह तो ध्वनित हो ही गया कि वे कांग्रेस की सांगठनिक कमजोरी से बेचैन हैं और यह चाहते हैं कि पार्टी नेतृत्व संगठन पर ध्यान दे।

इसे चंद दिनों पहले की उनकी उस पोस्ट से और अच्छे से समझा जा सकता है, जिसमें उन्होंने राहुल गांधी को संबोधित करते हुए लिखा था कि कांग्रेस को सुधारों और विकेंद्रीकरण की जरूरत है। इस पोस्ट में उन्होंने यह अपेक्षा तो जताई थी कि राहुल ऐसा करेंगे, पर इसी के साथ यह भी कहा था कि समस्या यह है कि उन्हें सहमत करना कठिन है।

यह पहली बार नहीं, जब कांग्रेस के किसी नेता ने पार्टी की कमजोरियों को रेखांकित किया हो, लेकिन कहीं कोई बुनियादी बदलाव होता नहीं दिख रहा है। यह इसलिए नहीं हो रहा है, क्योंकि गांधी परिवार चाटुकार नेताओं से घिरा है। कांग्रेस में उसी की पूछ-परख है, जो परिवार का गुणगान करता है। एक समय गांधी परिवार कांग्रेस की ताकत हुआ करता था, लेकिन अब स्थिति बदल चुकी है। इंदिरा गांधी के समय तो तब भी गनीमत थी, लेकिन उनके निधन के बाद जब राजीव गांधी पीएम बना दिए गए तो चाटुकार नेताओं का महत्व बढ़ गया और कांग्रेस कमजोर होती चली गई।

इंदिरा गांधी की हत्या से उपजी सहानुभूति के चलते 1984 में तो कांग्रेस ने प्रचंड जीत हासिल की, लेकिन उसके बाद से वह कभी बहुमत नहीं पा पाई। आज सोनिया और राहुल की कांग्रेस उन क्षेत्रीय दलों पर निर्भर है, जो उससे ही टूट कर बने हैं। कांग्रेस की कमान भले ही खरगे के हाथ में हो, लेकिन वास्तविक शक्ति गांधी परिवार के पास ही है और वह संगठन को मजबूत करने के बजाय अपनी नाकामियों का दोष मोदी सरकार और चुनाव आयोग पर मढ़ने में लगा हुआ है।

दुनिया के लिए खतरे की घंटी ईरानी जल संकट

> “ ग्लेशियर और भूजल एक तरह से प्राचीन ट्रस्ट फंड हैं। सूखे जैसी जरूरत के समय ही इनका उपयोग करने के बजाय हम इन्हें हल्के में ले रहे हैं। साथ ही हम अधिक वर्षा वाले वर्षों के दौरान भूजल प्रणालियों को फिर से भरने की कोशिश नहीं कर रहे हैं और ऐसा नहीं करके मीठे पानी का बड़ा संकट उत्पन्न कर रहे हैं।

ईरान इस समय भीषण जल संकट का सामना कर रहा है। राजधानी तेहरान में हालत इतनी खराब है कि ईरानी राष्ट्रपति को कहना पड़ रहा है कि यदि हालात नहीं सुधरे तो शहर वासियों को कहीं और ले जाना पड़ेगा। ईरान में पानी की कमी की जड़ें दुनिया के कई दूसरे हिस्सों जैसी ही हैं। इसके लिए जो कारण जिम्मेदार हैं उनमें दशकों तक जरूरत से ज्यादा पानी निकालना, पुराना, लीक होता इन्फ्रास्ट्रक्चर; नदियों पर बने बांधों की बढ़ती संख्या और कुप्रबंधन शामिल है। इन सबके बीच जलवायु परिवर्तन का असर भी है, जिससे मौसम ज्यादा गर्म और शुष्क हो रहा है। इस वजह से साल-दर-साल सूखे हुए जलाशय भर नहीं पा रहे हैं।

ईरान का भयंकर सूखा पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी चेतावनी है। दुनिया में ताजा पानी खतरनाक दर से लुप्त हो रहा है। दो दशकों से अधिक समय तक उपग्रहों से किए गए अध्ययन से पता चलता है कि जलवायु परिवर्तन, भूजल के असंतुलित उपयोग और अत्यधिक सूखे के कारण 2002 से पृथ्वी के महाद्वीपों में ताजे पानी की अभूतपूर्व कमी हो गई है। अमेरिका की एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए नए अध्ययन में कहा गया है कि उत्तरी गोलार्ध में महाद्वीप स्तर के चार बड़े शुष्क क्षेत्र उभर रहे हैं। इनमें उत्तर-पश्चिम भारत के क्षेत्र शामिल हैं। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि इन विशाल शुष्क क्षेत्रों का जल सुरक्षा, कृषि, समुद्र के स्तर और वैश्विक स्थिरता पर बुरा असर पड़ सकता है। शोध दल की रिपोर्ट के अनुसार भूमि पर शुष्क क्षेत्र हर साल कैलिफोर्निया के आकार से लगभग दोगुनी दर से बढ़ रहे हैं। चिंता की बात यह है कि शुष्क क्षेत्रों के अधिक शुष्क होने की दर आर्द्र क्षेत्रों के अधिक आर्द्र होने की दर से ज्यादा हो गई है, जिससे लंबे समय से चला आ रहा जल चक्र उलटने लगा है। उपलब्ध स्वच्छ जल पर इसके नकारात्मक प्रभाव चौंकाने वाले हैं। दुनिया की 75 प्रतिशत आबादी उन 101 देशों में रहती है जो पिछले 22 वर्षों से स्वच्छ जल की कमी झेल रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार अगले 50 से 60 वर्षों तक दुनिया की आबादी में वृद्धि जारी रहेगी। दूसरी तरफ स्वच्छ जल की उपलब्धता में भी लगातार कमी आने का खतरा है।

शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि भूमि पर जल हानि किस प्रकार से हो रही है। उन्होंने पहली बार पाया कि जल हानि में 68 प्रतिशत हिस्सा भूजल का है जो समुद्र के स्तर में वृद्धि में ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका की बर्फ की चादरों के संयुक्त योगदान से भी अधिक योगदान देता है। अध्ययन से जुड़े प्रमुख वैज्ञानिक जे. फैमिग्लिएटी ने कहा, ये निष्कर्ष हमारे जल संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के बारे में शायद अब तक का सबसे खतरनाक संदेश देते हैं। महाद्वीप सूख रहे हैं, स्वच्छ जल की उपलब्धता कम हो रही है और समुद्र का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। भूजल के निरंतर अति-उपयोग के परिणाम दुनिया भर के अरबों लोगों के लिए भोजन का संकट पैदा कर सकते हैं और जल सुरक्षा को कमजोर कर सकते हैं। इस स्थिति से निपटने के लिए सभी को एकजुट होकर वैश्विक जल सुरक्षा पर तत्काल कार्रवाई करनी होगी।

शोधकर्ताओं ने अमेरिकी-जर्मन ग्रेविटी रिकवरी एंड क्लाइमेट एक्सपेरिमेंट (ग्रेस) और ग्रेस-फॉलोऑन मिशनों के दो दशकों से अधिक के आंकड़ों का मूल्यांकन किया और यह देखा कि 2002 के बाद से स्थलीय जल भंडारण कैसे और क्यों बदला है। स्थलीय जल भंडारण में पृथ्वी की सतह और वनस्पति जल, मिट्टी की नमी, बर्फ, हिम और भूमि पर संग्रहीत भूजल शामिल हैं। अध्ययन के प्रमुख लेखक और एरिजोना यूनिवर्सिटी के शोध वैज्ञानिक ऋषिकेश ए. चंदनपुरकर ने कहा, यह आश्चर्यजनक है कि हम बड़े पैमाने पर ऐसा जल खो रहे हैं जिसका नवीकरण नहीं किया जा सकता। ग्लेशियर और भूजल एक तरह से प्राचीन ट्रस्ट फंड हैं। सूखे जैसी जरूरत के समय ही इनका उपयोग करने के बजाय हम इन्हें हल्के में ले रहे हैं। साथ ही हम अधिक वर्षा वाले वर्षों के दौरान भूजल प्रणालियों को फिर से भरने की कोशिश नहीं कर रहे हैं और ऐसा नहीं करके मीठे पानी का बड़ा संकट उत्पन्न कर रहे हैं।

अध्ययन ने 2014-15 के आसपास, ‘महा अल-नीनो’ वर्षों के दौरान एक ऐसे समय की पहचान की है जब जलवायु की चरम घटनाओं में वृद्धि होने लगी जिनके परिणामस्वरूप भूजल का उपयोग बढ़ गया और महाद्वीपीय शुष्कता ग्लेशियर और बर्फ की चादरों के पिघलने की दर से भी अधिक हो गई। इसके अतिरिक्त अध्ययन ने एक और उतार-चढ़ाव का खुलासा किया, जहां 2014 के बाद सूखने वाले क्षेत्र दक्षिणी गोलार्ध से ज्यादातर उत्तरी गोलार्ध में स्थित हो गए। महाद्वीपीय सूखापन में योगदान देने वाले प्रमुख कारकों में से एक उत्तरी गोलार्ध के मध्य अक्षांश वाले क्षेत्रों, उदाहरण के लिए, यूरोप में सूखे की बढ़ती चरम सीमाएं हैं। इसके अतिरिक्त कनाडा और रूस में पिछले दशक में बर्फ, हिम और स्थायी तुषार भूमि (पर्माफ्रॉस्ट) के पिघलने में वृद्धि हुई है।

पिछले एक अध्ययन में टीम के सदस्यों ने 2002 से 2016 तक के उपग्रह डेटा से स्थलीय जल भंडारण का अध्ययन किया था। नए अध्ययन में टीम ने 20 से अधिक वर्षों के डेटा का अध्ययन किया। शोधकर्ता चंदनपुरकर के अनुसार यह अध्ययन वास्तव में यह दर्शाता है कि स्थलीय जल भंडारण का निरंतर अवलोकन कितना महत्वपूर्ण है। ग्रेस एक्सपेरिमेंट के रिकॉर्ड वास्तव में उस स्तर पर पहुंच रहे हैं जहां हम जलवायु परिवर्तनशीलता के दीर्घकालिक रुझानों को स्पष्ट रूप से देख पा रहे हैं। अधिक स्थानीय अवलोकन और डेटा साझा करने से बेहतर जल प्रबंधन में मदद मिलेगी। इस अध्ययन से स्पष्ट है कि महाद्वीपीय शुष्कता का अभूतपूर्व स्तर कृषि और खाद्य सुरक्षा, जैव विविधता, मीठे पानी की आपूर्ति और वैश्विक स्थिरता के लिए खतरा है।

वर्तमान अध्ययन नीति निर्माताओं और समुदायों को बिगड़ती जल चुनौतियों और सार्थक परिवर्तन लाने के अवसरों के बारे में सूचित करने के लिए बड़े पैमाने पर निरंतर अनुसंधान की आवश्यकता पर जोर देता है। प्रमुख वैज्ञानिक फेमिग्लिएटी का मानना है कि यह शोध स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि हमें वैश्विक स्तर पर नई नीतियों और भूजल प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन को कम करने के प्रयासों के सामने चुनौतियां हैं, लेकिन हम क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय भूजल स्थिरता से संबंधित नई नीतियों को लागू करके महाद्वीपीय जल के सूखने की समस्या का समाधान कर सकते हैं। इससे समुद्र के स्तर में वृद्धि की दर धीमी होगी और आने वाली पीढ़ियों के लिए जल संरक्षण में मदद मिलेगी।

अध्ययन में भूजल क्षरण को धीमा करने और उसे उलटने, मीठे पानी के शेष संसाधनों की रक्षा करने और जल संकट व तटीय बाढ़ के बढ़ते जोखिम के अनुकूल होने के लिए तत्काल कार्रवाई का आह्वान किया गया है। शोध दल का कहना है कि नियोजित जल प्रबंधन, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और स्थायी नीतियां आने वाली पीढ़ियों के लिए जल संरक्षण को सुनिश्चित करने के अलावा ग्रह प्रणालियों को होने वाले और अधिक नुकसान को कम करने के लिए आवश्यक हैं।

प्रेरणा

जब मन का पात्र शुद्ध हुआ, तभी उतरा ईश्वर का प्रसाद

बहुत समय पहले की बात है। एक नगर में एक बनिया रहता था। धन-संपत्ति की उसके पास कोई कमी नहीं थी। व्यापार में वह कुशल था, व्यवहार में चतुर और समाज में प्रतिष्ठित माना जाता था। लोग उसे सम्मान से देखते थे, क्योंकि वह दान भी करता था और साधु-संतों की सेवा में भी आगे रहता था। लेकिन उसके भीतर एक इच्छा लगातार आकार ले रही थी। वह चाहता था कि कोई बड़ा महात्मा उसे दीक्षा दे दे, ताकि वह भी अपने को धार्मिक, आध्यात्मिक और विशेष मान सके। उसे लगता था कि दीक्षा मिलते ही उसका जीवन पूर्ण हो जाएगा और वह दूसरों से अलग, ऊँचे दर्जे का साधक बन जाएगा। इसी इच्छा के साथ वह एक प्रसिद्ध साधु के पास पहुँचा। साधु वर्षों से तपस्या कर रहे थे, उनके चेहरे पर वैराग्य और शांति का तेज था। बनिया ने बड़े आदर से प्रणाम किया और निवेदन किया कि महाराज, मैं दीक्षा लेना चाहता हूँ। कृपा करके मुझे अपना शिष्य बना लीजिए। साधु ने उसकी ओर शांत दृष्टि से देखा और कहा कि अभी नहीं, अगली बार मिलने पर दीक्षा दूँगा। इतना कहकर उन्होंने उसे विदा कर दिया।

बनिया को यह उत्तर अच्छा नहीं लगा। वह सोचने लगा कि मैं तो सेवा करता हूँ, दान देता हूँ, फिर भी साधु टाल क्यों रहे हैं। इसके बाद वह कई दिनों तक बार-बार साधु के पास जाने लगा। कभी मिठाइयाँ ले जाता, कभी वस्त्र, कभी धन का दान देने की पेशकश करता। हर बार वही विनती करता कि महाराज, अब तो दीक्षा दे दीजिए। लेकिन साधु हर बार वही कहते कि अभी समय नहीं आया है। बनिया के भीतर बेचैनी बढ़ने लगी। उसे लगा कि साधु जानबूझकर उसे टाल रहे हैं। समय बीतता गया। वर्षों गुजर गए। बनिया अपने व्यापार और जीवन में व्यस्त हो गया, लेकिन दीक्षा की इच्छा उसके मन में कहीं न कहीं दबी रही। एक दिन वही साधु अचानक उसके नगर में आए। इस बार साधु का रूप पहले जैसा नहीं था। उनके हाथ में एक भिक्षापात्र था, लेकिन वह पात्र मिट्टी, बाल, मूत्र और मल जैसी गंदी वस्तुओं से भरा हुआ था। साधु सीधे बनिया के घर पहुँचे और द्वार पर खड़े होकर भिक्षा माँगी। बनिया ने जब साधु को देखा, तो उसका हृदय प्रसन्नता से भर गया। उसे लगा कि वर्षों बाद गुरु स्वयं चलकर आए हैं, अवश्य अब दीक्षा का समय आ गया है। उसने बड़े उत्साह से साधु का स्वागत किया। भीतर जाकर उसने अपनी पत्नी और नौकरों से कहा कि आज विशेष पकवान बनाए जाएँ। खीर, हलवा, मिठाइयाँ और स्वादिष्ट व्यंजन तैयार किए गए। बनिया को पूरा विश्वास था कि आज साधु प्रसन्न होंगे और उसे दीक्षा दे देंगे।

जब भोजन तैयार हो गया, तो बनिया उसे लेकर साधु के पास आया। साधु ने भिक्षापात्र आगे बढ़ाया और कहा कि जो कुछ लाए हो, इसी में डाल दो। बनिया ने जैसे ही उस भिक्षापात्र की ओर देखा, उसका चेहरा बदल गया। उसे वह पात्र अत्यंत गंदा और घृणित लगा। उसने हाथ रोक लिया और संकोच के साथ कहा कि स्वामीजी, मैं इन शुद्ध और स्वादिष्ट पकवानों को इस गंदे पात्र में कैसे डाल सकता हूँ। कृपया पहले इसे साफ कर लें, फिर मैं पूरे आदर के साथ सब कुछ इसमें डाल दूँगा। साधु ने यह सुना और मंद मुस्कान के साथ उसकी ओर देखा। उन्होंने शांत स्वर में कहा कि जब इस पात्र की गंदगी तुम्हें इतनी अखर रही है, तो जरा अपने मन की ओर भी देखो। तुम्हारा हृदय भी इसी पात्र की तरह भरा हुआ है। उसमें कामना है, क्रोध है, लोभ है, अहंकार है, ईर्ष्या है और स्वार्थ है। ऐसे अशुद्ध हृदय में मैं भगवान का नाम और ब्रह्मज्ञान कैसे स्थापित कर दूँ। जिस प्रकार तुम इस गंदे पात्र में भोजन डालने से हिचक रहे हो, उसी प्रकार मैं तुम्हारे अशुद्ध मन में दीक्षा कैसे दे सकता हूँ। ये शब्द बनिया के लिए वज्रपात की तरह थे। उसका चेहरा लाल हो गया। उसे क्रोध भी आया और लज्जा भी। वर्षों से वह स्वयं को बड़ा धार्मिक और योग्य मानता आया था, लेकिन आज पहली बार किसी ने उसके भीतर की गंदगी को इतने स्पष्ट शब्दों में सामने रख दिया था। बिना कुछ कहे वह वहाँ से चला गया। उसके मन में साधु के प्रति रोष भी था, लेकिन कहीं न कहीं भीतर एक सच्ची चोट भी लगी थी।

समय बीतने के साथ उसका क्रोध धीरे-धीरे शांत हुआ। साधु के शब्द उसके मन में गूंजते रहे। उसने पहली बार ईमानदारी से अपने भीतर झाँकना शुरू किया। उसे दिखाई दिया कि वास्तव में उसका दान भी दिखावे से भरा था, सेवा में भी अहंकार था और दीक्षा की चाह में भी पद और प्रतिष्ठा की लालसा थी। उसे यह समझ में आने लगा कि वह भगवान को नहीं, बल्कि अपनी छवि को ऊँचा करना चाहता था।

धीरे-धीरे उसके जीवन में परिवर्तन आने लगा। उसने बिना किसी को बताए सच्चे मन से दान करना शुरू किया। उसने निस्वार्थ सेवा की, गरीबों की मदद की, अहंकार को त्यागने का अभ्यास किया। क्रोध और लोभ पर संयम लाने की कोशिश की। उसका मन धीरे-धीरे हल्का और शांत होने लगा। अब वह दीक्षा के बारे में नहीं सोचता था, बल्कि अपने आचरण को शुद्ध करने में लगा रहता था।

कुछ समय बाद वही साधु फिर उसके नगर में आए। इस बार बनिया ने कोई विशेष तैयारी नहीं की, कोई दिखावा नहीं किया। वह साधारण भाव से साधु के पास गया और प्रणाम किया। साधु ने उसकी आँखों में देखा और उन्हें वहाँ विनम्रता, शांति और पश्चाताप का भाव दिखाई दिया। साधु ने मुस्कराकर उसे पास बिठाया और बिना किसी औपचारिकता के उसे दीक्षा दे दी।

उस क्षण बनिया की आँखों से आँसू बहने लगे। उसे अनुभव हुआ कि दीक्षा कोई वस्तु नहीं है, जिसे जब चाहे प्राप्त कर लिया जाए। यह तो भीतर की पात्रता का फल है। जब मन का पात्र शुद्ध होता है, तभी उसमें ईश्वर का प्रसाद उतरता है। उसे यह भी समझ में आ गया कि उपदेश और दीक्षा से पहले स्वयं को तैयार करना आवश्यक है। जब जीवन में नैतिकता, संयम, ब्रह्मचर्य और निस्वार्थ भाव आ जाते हैं, तब गुरु और ज्ञान अपने-आप जीवन में प्रवेश कर जाते हैं।

काशी-तमिल संगमम अतीत की सांस्कृतिक विरासत, विकसित भारत संकल्प को एक सूत्र में पिरोने का जरिया

भारत के सनातन सांस्कृतिक आत्मा को यदि किसी एक पवित्र मंच पर सजीव रूप में देखा जा सकता है, तो वह है काशी-तमिल संगमम। यह एक ऐसा अनूठा उत्सव है, जहां उत्तर और दक्षिण की संस्कृति, सभ्यताएं, भाषाएं और परंपराएं एक विराट भारतीय परिवार की तरह एक-दूसरे का आलिंगन करती हैं।

संगमम के चौथे संस्करण के अवसर पर मैंने गहराई से यह अनुभव किया कि काशी और तमिलनाडु का यह संबंध केवल भौगोलिक या ऐतिहासिक नहीं, बल्कि हजारों वर्षों से बहती आध्यात्मिक सांस्कृतिक धारा का अविरल प्रवाह है। काशी अविनाशी है, अनादि काल से है। काशी को प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति की राजधानी कहा जाता है। दूसरी ओर तमिलनाडु, जिसकी भाषा विश्व की प्राचीनतम जीवित भाषाओं में से एक है, भारत की सनातन परंपरा, साहित्य, संगीत और दर्शन का महान वाहक रहा है।

काशी-तमिल संगमम इन दोनों सभ्यतागत स्तंभों के बीच के सेतु को पुनः सुदृढ़ करता है। उत्तर और दक्षिण के बीच यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान कोई नया प्रसंग नहीं है। देवारम नालवर के भक्ति गीतों से लेकर काशी में गूंजते संत कबीर के भजनों तक साधना की भाषा एक ही रही है। वह है भक्ति, ज्ञान, मानवता की भाषा। काशी में तमिल संतों की उपस्थिति और दक्षिण भारत में काशी को ‘मोक्ष की नगरी’ के रूप में मान्यता, इस गहरे संबंध को प्रमाणित करती है। प्रधानमंत्री मोदी की दूरदर्शिता और एक भारत, श्रेष्ठ भारत के दृढ़ संकल्प से 2022 में यह कार्यक्रम शुरू हुआ। आज यह कार्यक्रम राष्ट्रीय एकता के एक प्रमुख प्रतीक के रूप में विकसित हुआ है।

यहां गंगा की संस्कृति और कावेरी की परंपराएं एक-दूसरे से मिलकर भारत की सांस्कृतिक अखंडता को आगे बढ़ाती हैं। प्रधानमंत्री ने हाल में ‘मन की बात’ में इस उत्सव का उल्लेख करते हुए कहा था कि “यह संगमम विश्व के प्राचीनतम नगरों में से एक काशी और विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक तमिल का संगम है।” उन्होंने तमिल भाषा और संस्कृति को भारत का गौरव बताते हुए सभी से तमिल सीखने का आग्रह भी किया। यह आग्रह भारत की भाषाई विविधता को अपनाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है। काशी-तमिल संगमम के प्रत्येक संस्करण में तमिलनाडु के छात्र, अध्यापक, लेखक, मीडिया प्रोफेशनल्स, कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रों के लोग, महिलाएं और आध्यात्मिक विद्वान काशी आते रहे हैं। इस दौरान वे काशी के मंदिरों, तमिल से संबंधित केंद्रों और अयोध्या एवं प्रयागराज जैसे नगरों से परिचित होते हैं। चौथे संस्करण ने संगमम की सीमा और महत्वाकांक्षा को बढ़ाया है। काशी-तमिल संगमम 4.0 में युवाओं की भागीदारी विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्रों को इस कार्यक्रम से जोड़ने का उद्देश्य भावी पीढ़ी में राष्ट्रीय एकता की चेतना को और गहराई देना है। संगमम के दौरान उत्तर प्रदेश के 300 विद्यार्थी तमिलनाडु पहुंचे हैं और विभिन्न संस्थानों में तमिल भाषा सीख रहे हैं। उन्हें तमिलनाडु की समृद्ध परंपराओं, त्योहारों और भारतीय परंपरा की एकता से भी परिचित कराया जाएगा। तमिलनाडु से भी 50 तमिल शिक्षक वाराणसी पहुंचे हैं और संगमम के दौरान 1,500 से अधिक छात्रों को तमिल सिखाने का प्रयास कर रहे हैं। तमिल की मधुर ध्वनि काशी में गूंजी, इससे अधिक गौरव की बात क्या हो सकती है? काशी-तमिल संगमम 4.0 की एक और विशिष्ट और प्रेरक पहल ‘अगस्त्य अभियान’ है। यह अभियान तमिलनाडु के तेनकाशी से काशी तक एक प्राचीन सभ्यतागत मार्ग को पुनर्स्थापित करता है। महर्षि अगस्त्य भारतीय सभ्यता के उन महान ऋषियों में से हैं, जिन्होंने उत्तर और दक्षिण के बीच सांस्कृतिक संवाद को सुदृढ़ किया। उन्हें तमिल भाषा और सिद्ध चिकित्सा का प्रवर्तक माना जाता है। वे तमिल संस्कृति को उत्तर भारत तक ले कर आए। अगस्त्य अभियान उनके उसी योगदान को स्मरण करते हुए उत्तर-दक्षिण के सांस्कृतिक संबंधों को पुनः रेखांकित करता है।

काशी-तमिल संगमम 4.0 यह संकेत देता है कि भारत अपनी प्राचीन सभ्यतागत जड़ों को सहेजते हुए आत्मविश्वास के साथ भविष्य की ओर अग्रसर है। यह आयोजन हमें स्मरण कराता है कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अतीत की स्मृतियां केवल विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान को दिशा देने वाली प्रेरणा होती हैं। ऐसे मंचों के माध्यम से सांस्कृतिक संवाद, आंतरिक एकता और राष्ट्रीय चेतना को निरंतर सुदृढ़ किया जा रहा है। संगमम अतीत की सांस्कृतिक विरासत, वर्तमान की जीवंत सहभागिता और भविष्य के विकसित भारत जैसे राष्ट्रीय संकल्प, तीनों को एक सूत्र में पिरोता है। यह स्पष्ट करता है कि भारत का विकास केवल आर्थिक या तकनीकी प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि उसकी जड़ें सांस्कृतिक आत्मविश्वास और सभ्यतागत चेतना में निहित हैं। काशी तमिल संगमम 4.0 ने यह स्पष्ट किया कि भारत सरकार सांस्कृतिक एकीकरण के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है। इस आयोजन ने विभिन्न समुदायों को जोड़ा है। इसने यह पुनः स्थापित किया है कि भारत की सभ्यतागत शक्ति उसकी विविधता की एकता में निहित है। आज जब विश्व विविधताओं के बीच तनाव और संघर्षों से जूझ रहा है, तब भारत का विविधता को उत्सव के रूप में स्वीकार करना वैश्विक संदर्भ में भी प्रेरणास्पद बनकर उभरता है।

महाकवि सुब्रमण्य भारती ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था, जहां सिंधु तट पर तेलुगु गीत गाए जाएं और कावेरी की धरती के बच्चे गंगा के तट पर उत्सव मनाएं। उस स्वप्न ने काशी-तमिल संगमम के माध्यम से आज मूर्त रूप ले लिया है। इस संगमम से प्रेरणा लेकर हम कह सकते हैं: ‘कावेरी की पुत्री, गंगा के तट पर गाती है, भक्ति की मधुर धारा में, अपनी धुन मिलाती है। गंगा का पुत्र भी, कावेरी के तट पर आता है, तमिल के मीठे स्वरों में, भारत का नाद सुनाता है।’ काशी से शुरू हुआ यह कार्यक्रम, तमिल आध्यात्मिक विरासत की सबसे पवित्र जगहों में से एक रामेश्वरम में खत्म होगा। यही वह सेतु है, जो उत्तर और दक्षिण को जोड़ता है और भारत को एक परिवार होने की अनुभूति कराता है।

अभियान

जब समस्त विद्या मौन हो गई और आत्मा ने स्वयं को पहचान लिया

उस युग में, जब भारतभूमि पर ज्ञान केवल पुस्तकों में संचित नहीं था, बल्कि श्वास की तरह जीवन में प्रवाहित होता था, जब आश्रमों में केवल मंत्रोच्चार नहीं, बल्कि चेतना का जागरण होता था, उसी समय शौनक नाम के एक महान ऋषि हुए। वे ऐसे विद्वान थे, जिनके चरणों में विद्या स्वयं नतमस्तक होती प्रतीत होती थी। वेद, वेदांग, यज्ञ-विधान, दान और धर्म—इन सबमें वे पारंगत थे। उनका आश्रम समृद्ध था, शिष्य अनुशासित थे और समाज में उनका स्थान अत्यंत सम्मानित था। बाहर से देखने पर ऐसा लगता था कि उन्होंने जीवन में सब कुछ प्राप्त कर लिया है, परंतु भीतर कहीं एक सूक्ष्म पीड़ा थी, एक ऐसा मौन प्रश्न जो न किसी से कहा जा सकता था, न अनकहा छोड़ा जा सकता था। रात्रि के एकांत में, जब यज्ञ की अग्नि बुझ चुकी होती और शिष्य विश्राम कर रहे होते, तब शौनक अपने भीतर झांकते। उन्हें अनुभव होता कि कर्मों का यह विराट संसार उन्हें थका रहा है। यज्ञ समाप्त हो जाते हैं, मंत्रों की ध्वनि आकाश में विलीन हो जाती है, दान का पुण्य भी समय के साथ स्मृति बन जाता है। तब उनके मन में यह प्रश्न उठता कि क्या यही सब जीवन का अंतिम सत्य है। यदि सब कुछ परिवर्तनशील है, तो फिर वह क्या है जो कभी नहीं बदलता। वह कौन-सा ज्ञान है, जिसे जान लेने के बाद कोई शून्यता शेष न रहे।

यह प्रश्न धीरे-धीरे उनके अस्तित्व का केंद्र बन गया। वे समझ गए कि इस उत्तर को वे स्वयं से नहीं पा सकते, न ही केवल ग्रंथों के सहारे। उन्हें ऐसे गुरु की आवश्यकता थी, जिसने सत्य को जिया हो, केवल जाना न हो। इसी आंतरिक पुकार ने उन्हें महर्षि अंगिरा के आश्रम की ओर अग्रसर किया। अंगिरा का नाम सुनते ही उनके हृदय में श्रद्धा जाग उठी, क्योंकि वे केवल ज्ञानी नहीं, ब्रह्मविद्या के साक्षात साधक माने जाते थे।

अंगिरा का आश्रम घने वनों के बीच स्थित था। वहां पहुंचते ही शौनक ने एक गहन शांति का अनुभव किया, मानो समय स्वयं वहां ठहर गया हो। महर्षि अंगिरा ध्यान में लीन थे। उनके मुख पर एक अलौकिक तेज था, जो तप और आत्मज्ञान का साक्ष्य था। शौनक ने विनम्रता से उनके चरणों में प्रणाम किया। उनके भीतर वर्षों से संचित प्रश्न अब शब्दों का रूप लेने लगे। उन्होंने कहा कि भगवन्, मुझे वह बताइए, जिसे जान लेने पर इस समस्त जगत का ज्ञान अपने-आप प्रकट हो जाए। यह प्रश्न केवल जिज्ञासा नहीं था, बल्कि एक थके हुए यात्री की पुकार थी, जो अंततः अपने घर का रास्ता जानना चाहता हो।

अंगिरा ने नेत्र खोले और शौनक की ओर देखा। उनकी दृष्टि में कोई उपदेशक का गर्व नहीं था, बल्कि एक करुणामय पिता का स्नेह था। उन्होंने कहा कि शौनक, तुमने वही प्रश्न पूछा है, जो प्रत्येक जाग्रत आत्मा के भीतर किसी न किसी समय उठता है। उन्होंने बताया कि ज्ञान दो प्रकार का होता है। एक वह, जो संसार के व्यवहार को चलाता है, और दूसरा वह, जो मनुष्य को स्वयं से मिलाता है। वेद, यज्ञ, अनुष्ठान, नियम और विधियाँ जीवन को दिशा देती हैं, पर वे आत्मा के रहस्य को नहीं खोलतीं। वे आवश्यक हैं, पर पूर्ण नहीं। अंगिरा ने आगे कहा कि वह ज्ञान, जिसके द्वारा उस अविनाशी तत्व का अनुभव होता है, वही परा विद्या है। वही ब्रह्मविद्या है। ब्रह्म न जन्म लेता है, न मरता है। वह न समय से बंधा है, न रूप से। वही इस सृष्टि का मूल है। उसी से यह जगत उत्पन्न हुआ, उसी में स्थित है और अंततः उसी में विलीन हो जाता है। वह दिखाई नहीं देता, फिर भी सब कुछ उसी से प्रकाशित है। जैसे सूर्य स्वयं को दिखाने के लिए किसी अन्य प्रकाश का मोहताज नहीं होता, वैसे ही ब्रह्म स्वयं सिद्ध है।

शौनक यह सुनते हुए भीतर से कांप उठे। उन्हें लगा मानो कोई परदा धीरे-धीरे हट रहा हो। अंगिरा ने कहा कि जिस ब्रह्म को तुम बाहर खोज रहे हो, वह वास्तव में तुम्हारे भीतर ही है। जैसे अग्नि लकड़ी में छिपी रहती है और उचित प्रयास से प्रकट होती है, वैसे ही परमात्मा प्रत्येक जीव के भीतर विद्यमान है। जब मनुष्य तप, श्रद्धा और संयम के द्वारा अपने मन को शुद्ध करता है, तब वह उस सत्य को अनुभव करता है। यह यात्रा बाहर की नहीं, भीतर की है। इसे जान लेने पर भय स्वतः समाप्त हो जाता है, क्योंकि तब मनुष्य समझ लेता है कि उसका वास्तविक स्वरूप अविनाशी है। इन वचनों ने शौनक के हृदय को विदीर्ण कर दिया। उनकी आंखों से अश्रु बहने लगे। वर्षों का विद्वान अहंकार, प्रतिष्ठा का भार, सब जैसे पिघलकर बह गया। उन्हें पहली बार यह बोध हुआ कि वे अब तक सत्य को बाहर ढूंढते रहे, जबकि वह सदा उनके भीतर उपस्थित था। अंगिरा ने उन्हें समझाया कि यह संसार परिवर्तन का खेल है। जो आज है, वह कल नहीं रहेगा। केवल आत्मा ही ऐसी है, जो नित्य है, शाश्वत है। जो इसे पहचान लेता है, वही वास्तव में अमर हो जाता है।

अंगिरा ने ब्रह्म के स्वरूप को समझाने के लिए कहा कि जैसे मकड़ी अपने ही शरीर से जाला निकालती है और फिर उसी में निवास करती है, वैसे ही ब्रह्म से यह सृष्टि प्रकट होती है और अंततः उसी में विलीन हो जाती है। जैसे बीज से वृक्ष बनता है और वृक्ष से फिर बीज उत्पन्न होता है, वैसे ही यह सृष्टि-चक्र चलता रहता है। इसे जान लेने पर मनुष्य समझ जाता है कि सच्चा यज्ञ बाहरी अग्नि में नहीं, बल्कि भीतर की चेतना को जाग्रत करने में है। सच्चा दान धन का नहीं, अहंकार का त्याग है। सच्चा ज्ञान किसी पुस्तक में नहीं, स्वयं के भीतर है।

इन शिक्षाओं ने शौनक के जीवन को पूर्णतः बदल दिया। वे वही व्यक्ति नहीं रहे, जो प्रश्नों का बोझ लेकर उस आश्रम में आए थे। उनके भीतर एक ऐसी शांति उतर आई, जो शब्दों से परे थी। उन्होंने महर्षि अंगिरा को प्रणाम किया और कहा कि आज वे जान गए हैं कि ब्रह्म को कहीं खोजने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह सदा से उनके भीतर ही था। अंगिरा ने मंद मुस्कान के साथ कहा कि जो यह जान लेता है कि उसका वास्तविक स्वरूप ही ब्रह्म है, उसके लिए संसार में कोई बंधन शेष नहीं रहता।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 (2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जीवनचरित्र पर आधारित मेगा म्यूजिकल मल्टीमीडिया शो 'नमोत्सव' कार्यक्रम का उद्घाटन किया

▸▸ नमोत्सव किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास की यात्रा है : केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह

▸▸ अहमदाबाद में 150 कलाकारों द्वारा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जीवन, विचार और राष्ट्रनिर्माण की यात्रा को नमोत्सव के माध्यम से प्रेरणादायक रूप में प्रस्तुत किया गया

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी एवं मंत्रियों की प्रोत्साहक उपस्थिति

(जीएनएस)। गांधीनगर : केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जीवन, विचार, कार्य संस्कृति और राष्ट्र के प्रति अडिग संकल्प को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आयोजित मेगा म्यूजिकल मल्टीमीडिया शो 'नमोत्सव' केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास, संकल्प और संस्कारों की यात्रा है। रविवार को अहमदाबाद के संस्कारधाम, घुमा में आयोजित प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जीवनचरित्र पर आधारित मेगा म्यूजिकल मल्टीमीडिया शो 'नमोत्सव' कार्यक्रम में प्रसिद्ध कलाकार श्री साईराम दवे सहित कुल 150 कलाकारों ने भाग लिया। जिसे केंद्रीय गृह मंत्री, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उपमुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, मंत्रियों सहित सभी उपस्थित महानुभावों ने रुचिपूर्वक देखा।

श्री शाह ने कहा कि नमोत्सव के माध्यम से ऐसे जीवन का प्रस्तुतीकरण होता है, जिसने केवल 11 वर्षों की अल्प अवधि में 140 करोड़ भारतीयों के मन में यह दृढ़ विश्वास स्थापित किया है कि भारत विश्व में प्रथम बनेगा। यह विश्वास विचारों, कार्यों, योजना और अडिग संकल्प से जन्म लेता है, और यह तभी संभव होता है जब कोई व्यक्ति अपना संपूर्ण जीवन उस विचार के लिए समर्पित कर दे। श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी कोई सामान्य नेता नहीं हैं, बल्कि अपनी नियति को अपनी नीयत से गढ़ने वाले असाधारण व्यक्तित्व हैं। अनेक नेता परिस्थितियों के कारण ऊंचाइयों तक पहुंचे हैं, लेकिन नरेन्द्र मोदी ऐसे एकमात्र नेता हैं जिन्होंने निष्ठा, पारदर्शिता और राष्ट्रहित की भावना से सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने कहा कि अत्यंत गरीब परिवार में जन्म लेकर जीवन की शुरुआत करने वाले नरेन्द्र मोदीजी आज ऐसे प्रधानमंत्री हैं जिन्हें विश्व के 29 देशों ने अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया है। यह सम्मान केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि 140 करोड़ भारतीयों का गौरव है।

श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री के रूप में 11 वर्षों में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 27 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए, 81 करोड़ लोगों को निःशुल्क अनाज सुरक्षा मिली, 11 करोड़ से अधिक गैस कनेक्शन, 15 करोड़ से अधिक शौचालय, 10 करोड़ से अधिक घरों में शुद्ध पेयजल, 56 करोड़ लोगों को बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ा गया और 4 करोड़ से अधिक परिवारों को पक्के मकान मिले हैं। उन्होंने बल देकर कहा कि अपने लिए एक कमरा भी न बनवाने वाले प्रधानमंत्री ने करोड़ों गरीबों को घर बनाकर दिए हैं। यही नीति, नीयत और नेतृत्व का श्रेष्ठ उदाहरण है।

श्री अमित शाह ने कहा कि अक्टूबर 2001 में गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में कार्यभार संभालने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी ने ज्योतिग्राम योजना के माध्यम से राज्य के प्रत्येक गांव तक 24 घंटे बिजली पहुंचाई और गुजरात को विकास का मॉडल बनाया। यही कार्य संस्कृति आज पूरे भारत के लिए प्रेरणा बन गई है। उन्होंने आगे कहा कि राम मंदिर निर्माण, अनुच्छेद 370 का अंत, आतंकवाद के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई, भारत का चौथा और तेजी से तीसरा सबसे बड़ा अर्थतंत्र बनना, डिजिटल व्यवस्था में विश्व में प्रथम स्थान ; ये सभी उपलब्धियां दृढ़ नीयत और स्पष्ट दृष्टि का परिणाम हैं।

श्री शाह ने कहा कि नमोत्सव नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा। देश के बच्चों, युवाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए यह कार्यक्रम जीवन में मूल्यों, देशप्रेम और सेवा-भावना को जागृत करेगा।

अंत में श्री अमित शाह ने संस्कारधाम के आयोजकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि तीन दिनों तक समाज के सभी वर्गों को नमोत्सव देखने का अवसर दिया गया, इसके लिए संस्कारधाम अभिनंदन के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि नमोत्सव केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि नरेन्द्र मोदी द्वारा भारत के लिए स्थापित किए गए मानकों को आत्मसात करने की यात्रा है।

'नमोत्सव' कार्यक्रम को देखने के लिए आईसीसी के चेयरमैन श्री जय शाह, मंत्री श्री ऋषिकेशभाई पटेल, राज्य मंत्री श्रीमती रिवाबा जाडेजा, श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला, राज्यसभा सांसद श्री परिमल नथवाणी, भाजपा शहर अध्यक्ष श्री प्रेरकभाई शाह, संस्कारधाम के चेयरमैन डॉ. आर. के. शाह, राजनीतिक एवं सामाजिक अग्रणी तथा बड़ी संख्या में शहरवासी उपस्थित रहे।

वडोदरा मंडल के बाजवा-अहमदाबाद खंड पर स्वदेशी 'कवच' प्रणाली स्थापित की गई

(जीएनएस)। रेल परिचालन में संरक्षा को और मजबूत करने के प्रयासों के तहत, वडोदरा मंडल के सिग्नल एवं दूरसंचार विभाग द्वारा 96 किलोमीटर लंबे बाजवा-अहमदाबाद खंड पर स्वदेशी स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (एटीपी) प्रणाली 'कवच' सफलतापूर्वक स्थापित की गई है। इससे संबंधित रेल खंड पर संरक्षा में वृद्धि के साथ साथ उच्च गति पर भी सुरक्षित ट्रेन परिचालन सुनिश्चित होगा। कवच प्रणाली द्वारा नए संरक्षित मार्ग पर आज 29 दिसंबर,2025 को वडोदरा - अहमदाबाद फास्ट पैसेंजर में वडोदरा के मंडल रेलवे प्रबंधक श्री राजू भडके उपस्थित रहेंगे एवं इस प्रणाली का अवलोकन करेंगे। मंडल रेल प्रबंधक श्री भडके के कुशल मार्गदर्शन में वडोदरा मंडल ने यह महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है।

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस खंड पर चलने वाले सभी लोकोमोटिव कवच प्रणाली से सुसज्जित हैं। इस स्वदेशी तकनीक को संरक्षा जोखिमों को स्वचालित रूप से कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो लाल सिग्नल को पार करने में रोकथाम (सिग्नल पासिंग एट डेंजर), लूप लाइनों और मुख्य रेल खंडों पर स्वचालित गति नियंत्रण, और आमने-सामने और पीछे से टक्करों से सुरक्षा जैसी कार्यक्षमताएं प्रदान करती है।

टर्मिनेटिंग / ओरिजिनेटिंग ट्रेन की सुविधा के साथ उत्राण स्टेशन का किया जा रहा है विकास, भारतीय रेल की अगले 5 वर्षों में प्रमुख शहरों में रेल गाड़ियों की संचालन क्षमता दोगुनी करने की योजना

(जीएनएस)। यात्रा की मांग में लगातार हो रही तीव्र वृद्धि को देखते हुए, भारतीय रेल द्वारा अगले 5 वर्षों में प्रमुख शहरों की नई रेल गाड़ियों के संचालन की क्षमता को वर्तमान स्तर से दोगुना करने की योजना है। आगामी वर्षों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वर्तमान बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की दिशा में यह महत्वपूर्ण पहल है। इस दिशा में वर्ष 2025 -26 के दौरान वडोदरा मंडल के प्रतापनगर स्टेशन पर दो नए प्लेटफार्म का निर्माण किया गया। उत्राण स्टेशन पर प्लेटफार्म संख्या 3 एवं 4 के विस्तार के साथ अमृत भारत स्टेशन के सभी कार्य पूरे कर लिए गए है। टर्मिनेटिंग / ओरिजिनेटिंग ट्रेन की सुविधा के साथ उत्राण स्टेशन का विकास किया जाएगा, जिसमे नए हाई लेवल प्लेटफार्म का निर्माण, अप दिशा के प्लेटफार्म के विस्तार और अन्य यात्री सुविधाओं के कार्य शामिल है।

वडोदरा मंडल पर शॉर्ट टर्म यानि अगले दो वर्ष के अंतर्गत रानोली स्टेशन पर 2 पिट लाइनों एवं एक स्टेब्लिंग लाइन का निर्माण तथा उत्राण स्टेशन पर 2 नए प्लेटफार्मों का निर्माण किया जाएगा।इसके अतिरिक्त, लॉन्ग टर्म यानि 3 से 5 वर्ष की योजना के अंदर प्रतापनगर स्टेशन पर 1 पिट लाइन एवं 1 स्टेबलिंग लाइन का निर्माण प्रस्तावित है।

इसके अतिरिक्त प्रतापनगर और उत्राण में कोचिंग क्षमता बढ़ाने के लिए कोचिंग टर्मिनल का निर्माण किया जाएगा।

वर्ष 2030 तक रेल गाड़ियों की संचालन क्षमता को दोगुना करने के उद्देश्य से भारतीय रेल द्वारा अधोसंरचना विकास के महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं, जिनमेनिम्न कार्य शामिल होंगे:

i. मौजूदा टर्मिनलों को अतिरिक्त प्लेटफॉर्म, स्टेबलिंग लाइन, पिट लाइन और पर्याप्त शंटिंग सुविधाओं से सुसज्जित करना।

ii. शहरी क्षेत्र में और उसके आसपास नए टर्मिनलों की पहचान और निर्माण करना।

iii. मेगा कोचिंग कॉम्प्लेक्स सहित रखरखाव सुविधाएं।

iv. विभिन्न स्थानों पर रेल गाड़ियों की बढ़ती संख्या की व्यवस्था करने के लिए यातायात सुविधा कार्यों, सिग्नलिंग उन्नयन और मल्टीट्रैकिंग के माध्यम से अनुभागीय क्षमता में वृद्धि करना।

केंद्रीय रेल मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्री और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने इस सम्बन्ध में कहा, "हम यात्रियों की बढ़ती मांग को पूरा करने और भीड़भाड़ को कम करने के लिए विभिन्न शहरों में कोचिंग टर्मिनलों का विस्तार कर रहे हैं और अनुभागीय एवं परिचालन क्षमताओं को बढ़ा रहे हैं। इस कदम से हमारे रेलवे नेटवर्क का उन्नयन होगा और राष्ट्रव्यापी संपर्क सुविधा में सुधार होगा।"

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के करकमलों से 330 करोड़ रुपए की विकास परियोजनाओं का लोकार्पण, अनावरण एवं सनद वितरण

(जीएनएस)। गांधीनगर : केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के करकमलों से ; मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रेरक उपस्थिति में रविवार को अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन द्वारा 330 करोड़ रुपए की विभिन्न विकास परियोजनाओं का लोकार्पण, ई-लोकार्पण, गणेशजी की मूर्ति का अनावरण तथा नवी वणझर गांव के पुनर्वासित निवासियों को सनद वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम अंतर्गत अहमदाबाद शहर के पश्चिम एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण वेस्टर्न ट्रंक मेन लाइन प्रोजेक्ट का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा "हृदय को आनंद देने वाला यह छोटा, लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। 1973 की साबरमती बाढ़ त्रासदी में जिन नागरिकों का सब कुछ नष्ट हो गया था, उन्हें आज 50 वर्षों बाद प्लॉट का मालिकाना अधिकार मिला है। इतने बड़े अहमदाबाद शहर में 173 लाभार्थी संख्या में भले ही कम लगें, लेकिन उनके लिए यह क्षण अत्यंत ऐतिहासिक और भावनात्मक है।"

श्री शाह ने इस संवेदनशील निर्णय के लिए स्थानीय जनप्रतिनिधि श्री अमितभाई ठाकर, अहमदाबाद की महापौर तथा म्युनिसिपल कमिश्नर को अभिनंदन दिया। उन्होंने कहा कि पांच दशकों से चली आ रही समस्या का आज स्थायी समाधान हुआ है, जो संवेदनशील शासन का प्रमाण है।

उन्होंने आगे कहा कि पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम अहमदाबाद के लगभग 15 लाख नागरिकों के लिए पहले गटर के पानी की निकासी की कोई सुगठित व्यवस्था उपलब्ध नहीं थी। वर्ष 2000 से 2005 के दौरान शेला से चांदखेडा तक के क्षेत्रों में तीव्रता से शहरीकरण हुआ, लेकिन संपूर्ण ड्रेनेज व्यवस्था विकसित करने के लिए बड़े बजट और लंबे समय की आवश्यकता थी। कई स्थानों पर गटर ओवरफ्लो की स्थिति देखकर उन्हें सांसद के रूप में पीड़ा होती थी।

उन्होनें आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में लोग अच्छा और स्वस्थ जीवन जी सकें; ऐसे वातावरण के निर्माण के लिए अमृत योजना सहित शहरी विकास योजनाओं का व्यापक उपयोग किया गया है। लगभग 400 करोड़ रुपए के खर्च से 1200 से 1800 मिली मीटर व्यास की विशाल आरसीसी पाइपलाइनें बिछाई गई हैं। इसके परिणामस्वरूप गोता, चांदलोडिया, साइंस सिटी, साउथ बोपल, भाडज, हेबतपुर, थलतेज, बोपल-घुमा, बोडकदेव, वेजलपुर, सरखेज, मक्तमपुरा, महमदपुरा, फतेहवाडी, शांतिपुरा और सनाथल सहित क्षेत्रों के लगभग 15 लाख नागरिकों को ड्रेनेज ओवरफ्लो और गंदे पानी की समस्या से स्थायी राहत मिलेगी।

श्री शाह ने कहा, "वर्षों पुरानी मांगों का संवेदनशीलता के साथ समाधान होना; प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा स्थापित संवेदनशील विकास की राजनीति का परिणाम है। जनता मांग करे या न करे, फिर भी उनकी समस्याओं का समाधान करने की कार्य संस्कृति उन्होंने गुजरात से लेकर समग्र देश में विकसित की है।"

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रेरक उपस्थिति में अहमदाबाद को आधुनिक ड्रेनेज सुविधा का ऐतिहासिक लाभ

▸▸ वर्षों पुरानी मांगों का संवेदनशीलता के साथ पूरा होना प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा स्थापित संवेदनशील विकास की राजनीति है : केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह

▸▸ वर्ष 2025 अहमदाबाद के लिए विकास की छलांग और विश्व स्तर पर गौरव का वर्ष सिद्ध हुआ है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

-:मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल:-

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि वर्ष 2025 विदा ले रहा है और यह वर्ष अहमदाबाद के लिए विकास की छलांग तथा विश्व स्तर पर गौरव का वर्ष सिद्ध हुआ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के मार्गदर्शन में सरकार इस संकल्प के साथ कार्य कर रही है कि सामान्य नागरिकों की रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी जरूरतें सरलता से पूरी हों। उन्होंने कहा कि आदरणीय मोदी साहब ने हर निर्णय के केंद्र में जनसामान्य नागरिक के हित को रखा है। इसी दृष्टिकोण के कारण नागरिकों के जीवन को अधिक गुणवत्तापूर्ण बनाने वाली सुविधाओं में प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के प्रयासों से गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र सबसे हरित क्षेत्र बना है। मियावाकी पद्धति से वन एवं ऑक्सीजन पार्क आदि के माध्यम से ग्रीन कवर बढ़ाया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वणझर गांव के नागरिकों को आज सनद प्राप्त हुई है, जो इस विचार को दर्शाती है कि जो लोगों के दुःख को समझे, वही सच्चा लोकसेवक होता है।" शहरी विकास बजट में पिछले वर्ष की तुलना में 40 प्रतिशत वृद्धि कर 30,000 करोड़ रुपए का बजट आवंटित किया गया है तथा वर्ष 2025 को शहरी विकास वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। आने वाले समय में अहमदाबाद कई अंतरराष्ट्रीय खेलों का केंद्र बनेगा, ऐसे में उन्होंने नागरिकों से शहर को स्वच्छ, सुंदर और हरियाला बनाने का सामूहिक संकल्प लेने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर अहमदाबाद की महापौर श्रीमती प्रतिभा जैन ने शहर के सर्वांगीण शहरी विकास, आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर और नागरिक सुविधाओं को सुदृढ़ करने वाले विभिन्न प्रोजेक्ट्स के लिए केंद्रीय गृह मंत्री एवं गांधीनगर के सांसद श्री अमित शाह तथा मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद श्री नरहरि अमीन, स्थानीय विधायक, म्युनिसिपल कमिश्नर श्री बंछानिधि पाणि, कलेक्टर श्री सुजीत कुमार, महानगर पालिका के पदाधिकारी, अधिकारी तथा बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

अहमदाबाद मंडल के आदरज मोटी–विजापुर रेलखंड का गेज परिवर्तन कार्य पूर्ण

29 एवं 30 दिसंबर 2025 को 39.75 किमी लंबे ब्रॉड गेज में परिवर्तित इस रेलखंड का सीआरएस पश्चिम सर्कल द्वारा संरक्षा निरीक्षण किया जाएगा

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत आदरज मोटी–विजापुर रेलखंड (39.75 किमी) का गेज परिवर्तन कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है। यह खंड अब मीटर गेज से ब्रॉड गेज में परिवर्तित होकर आधुनिक, सुरक्षित एवं कुशल रेल परिचालन के लिए पूरी तरह तैयार है। इस खंड का संरक्षा निरीक्षण (सेफ्टी इंस्पेक्शन) रेल संरक्षा आयुक्त (CRS), पश्चिम सर्कल द्वारा 29 एवं 30 दिसंबर 2025 को किया जाएगा। आदरज मोटी–विजापुर रेल खंड अहमदाबाद मंडल की आदरज मोटी–विजापुर–अंबलियासन गेज परिवर्तन परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस परियोजना को वर्ष 2022–23 स्वीकृति प्रदान की गई थी। परियोजना की अनुमानित लागत 417.53 करोड़ है, जिसे 17.05.2022 को स्वीकृत किया गया।

इस रेलखंड में कुल 01 मेजर ब्रिज, 44 माइनर ब्रिज तथा 35 रोड अंडर ब्रिज (RUB) का निर्माण किया गया है तथा इस रेलखंड में आदरज मोटी, रांधेजा, उनावा–वासन, मकाखड़, लोदरा एवं विजापुर स्टेशन शामिल हैं।

इस ब्रॉड गेज खंड में 60 किग्रा के नए रेल पैनल बिछाए गए हैं। आदरज मोटी एवं विजापुर स्टेशनों पर स्टैंडर्ड–II इंटरलॉकिंग सिस्टम तथा मल्टीपल एस्पेक्ट कलर लाइट सिग्नलिंग (MACLS) स्थापित की गई है, जिससे ट्रेनों के परिचालन में संरक्षा, समयपालन और दक्षता में उल्लेखनीय सुधार होगा। गेज परिवर्तन के पश्चात इस मार्ग के माध्यम से यात्रियों को देश के प्रमुख रेलवे स्टेशनों और बड़े शहरों से प्रत्यक्ष ब्रॉड गेज कनेक्टिविटी प्राप्त होगी।

आदरज मोटी वर्तमान में एक विद्यमान द्वि-गेज जंक्शन स्टेशन है, जहाँ से आदरज मोटी–गांधीनगर–अहमदाबाद (ब्रॉड गेज) तथा आदरज मोटी–कड़ी–कटोसन (ब्रॉड गेज) लाइनें जुड़ी हुई हैं। गेज परिवर्तन से पूर्व आदरज मोटी–विजापुर एक पृथक मीटर गेज खंड था, जो अब ब्रॉड गेज में परिवर्तित होकर एकीकृत रेल नेटवर्क का हिस्सा बन गया है।

इस गेज परिवर्तन परियोजना से आदरज मोटी–विजापुर के बीच एकीकृत ब्रॉड गेज रेल प्रणाली उपलब्ध होगी। इससे क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास को गति मिलेगी तथा पर्यावरण–अनुकूल, सतत और तेज़ रेल संपर्क सुनिश्चित होगा। बेहतर परिवहन सुविधा से दैनिक यात्रियों, पर्यटकों एवं व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा, जिससे क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण को मजबूती प्राप्त होगी।

संरक्षा निरीक्षण के पूर्ण होने के पश्चात इस मार्ग पर ट्रेनों का परिचालन प्रारंभ किया जा सकेगा। नए ब्रॉड गेज कनेक्शन से भविष्य में नई यात्री एवं मालगाड़ियों के संचालन की संभावनाएँ भी बढ़ेंगी। इससे उत्तरी गुजरात के ग्रामीण एवं औद्योगिक क्षेत्रों को बेहतर रेल कनेक्टिविटी मिलेगी, यात्रा समय में कमी आएगी और क्षेत्रीय व्यापार, उद्योग एवं कृषि को नई गति प्राप्त होगी।

तेज रफ्तार बनी मौत का कारण, खड़े ट्रक से टकराई बाइक, झरिया में दो युवकों की दर्दनाक मौत

(जीएनएस)। धनबाद। झरिया के सुदामडीह थाना क्षेत्र में रविवार की शाम एक दिल दहला देने वाला सड़क हादसा हुआ, जिसने पूरे इलाके को शोक में डुबो दिया। तेज रफ्तार से दौड़ रही एक बाइक सड़क किनारे खड़े ट्रक के पीछे जा टकराई, जिससे बाइक सवार दो युवकों की मौके पर ही या इलाज के दौरान मौत हो गई। हादसा इतना भयावह था कि टक्कर की आवाज दूर तक सुनाई दी और कुछ ही पलों में घटनास्थल पर अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी, लेकिन तब तक एक युवक की जान जा चुकी थी, जबकि दूसरे ने अस्पताल पहुंचते-पहुंचते दम तोड़ दिया।

यह हादसा झरिया के पाथरडीह इलाके में सेवन डेज होटल के समीप हुआ। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, बाइक अत्यधिक तेज गति में थी और संतुलन बिगड़ते ही सड़क किनारे खड़े ट्रक के पिछले हिस्से से जा टकराई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बाइक पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और दोनों युवक सड़क पर दूर जा गिरे। आसपास मौजूद लोगों ने तुरंत मदद की कोशिश की और घायलों को अस्पताल पहुंचाने की व्यवस्था की, लेकिन हादसे की गंभीरता इतनी ज्यादा थी कि जान नहीं बचाई जा सकी।

मृतकों की पहचान एनबीसीसी कॉलोनी निवासी रितेश मोदी और जेलगोड़ा निवासी जीतू पासवान के रूप में हुई है। दोनों की उम्र करीब 20 वर्ष बताई जा रही है। जानकारी के अनुसार, दोनों युवक सिंदरी की ओर से झरिया की तरफ आ रहे थे। रविवार होने के कारण सड़क पर वाहनों की आवाजाही अपेक्षाकृत कम थी, लेकिन तेज रफ्तार और सड़क किनारे खड़े ट्रक ने इस सफर को आखिरी सफर में बदल दिया। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि ट्रक पर पर्याप्त संकेतक या रिफ्लेक्टर लगे होते, तो शायद हादसे को टाला जा सकता था।

घटना की सूचना मिलते ही सुदामडीह थाना पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को संभाला। पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर आवश्यक कानूनी प्रक्रिया शुरू की और पोस्टमार्टम के लिए भेजने की तैयारी की। दुर्घटनाग्रस्त बाइक और ट्रक को भी जब्त कर लिया गया है। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि ट्रक किस परिस्थिति में सड़क किनारे खड़ा था और क्या उसमें सुरक्षा मानकों का पालन किया गया था या नहीं। प्रारंभिक जांच में तेज रफ्तार को हादसे की मुख्य वजह माना जा रहा है, लेकिन पुलिस सभी पहलुओं की गहन जांच कर रही है।

स्थानीय निवासी अभिषेक पांडे ने बताया कि टक्कर के बाद कुछ देर के लिए सड़क पर जाम जैसी स्थिति बन गई थी। लोग सहमे हुए थे और हादसे का दृश्य देखकर हर कोई स्तब्ध रह गया। उन्होंने कहा कि यह इलाका पहले भी दुर्घटनाओं के लिए जाना जाता है, क्योंकि अक्सर भारी वाहन सड़क किनारे बिना किसी चेतावनी संकेत के खड़े कर दिए जाते हैं। ऐसे में रात के समय या तेज रफ्तार वाहनों के लिए खतरा और बढ़ जाता है।

इस दर्दनाक हादसे के बाद इलाके में शोक का माहौल है। दोनों मृतक युवाओं के घरों में मातम पसरा हुआ है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। रितेश मोदी और जीतू पासवान की असमय मौत ने उनके परिवारों के सपनों को चकनाचूर कर दिया है। मोहल्ले के लोग और रिश्तेदार परिजनों को ढांढस बंधाने पहुंच रहे हैं, लेकिन गम की इस घड़ी में शब्द भी कम पड़ते नजर आ रहे हैं।

पुलिस ने मृतकों के परिजनों को घटना की जानकारी दे दी है और आगे की कानूनी कार्रवाई पूरी की जा रही है। प्रशासन की ओर से भी सड़क सुरक्षा को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े हो गए हैं। यह हादसा न केवल तेज रफ्तार के खतरे को उजागर करता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि सड़क किनारे खड़े भारी वाहनों की लापरवाही किस तरह जानलेवा साबित हो सकती है। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि सड़क सुरक्षा के नियमों को सख्ती से लागू किया जाए, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोका जा सके।

झरिया की इस घटना ने एक बार फिर यह कड़वा सच सामने रख दिया है कि कुछ सेकंड की लापरवाही या तेज रफ्तार का जुनून जिंदगी भर का दर्द दे जाता है। दो युवाओं की मौत सिर्फ एक हादसा नहीं, बल्कि सड़क सुरक्षा को लेकर गंभीर चेतावनी है, जिसे नजरअंदाज करना और भी बड़ी त्रासदियों को जन्म दे सकता है।

मानवता को मार्ग दिखाने का दायित्व भारत पर, शक्ति नहीं संस्कार बने वैश्विक पहचान: मोहन भागवत

(जीएनएस)। हैदराबाद। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि भारत का विश्व को दिशा देना कोई आकांक्षा या महत्वाकांक्षा नहीं, बल्कि आज के समय की अनिवार्य आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में जब दुनिया दिशाहीनता, संघर्ष और नैतिक संकट से गुजर रही है, तब भारत का कर्तव्य बनता है कि वह मानवता को संतुलन, करुणा और जीवन मूल्यों का मार्ग दिखाए। भागवत तेलंगाना के रंगारेड्डी जिले में आयोजित 'विश्व संघ शिविर' के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे, जहां देश-विदेश से आए स्वयंसेवकों और कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में उन्होंने भारत की वैश्विक भूमिका पर विस्तार से अपने विचार रखे।

अपने संबोधन में मोहन भागवत ने कहा कि भारत का 'विश्वगुरु' बनना किसी प्रकार का प्रभुत्व स्थापित करने या शक्ति प्रदर्शन की सोच से जुड़ा नहीं है। भारत की परंपरा सदैव मानवता के कल्याण, सह-अस्तित्व और समरसता पर आधारित रही है। उन्होंने कहा कि भारत की सभ्यता ने कभी किसी पर अपने विचार थोपने का प्रयास नहीं किया, बल्कि अपने आचरण, जीवन पद्धति और दर्शन के माध्यम से विश्व को प्रेरित किया है। आज भी यही मार्ग प्रासंगिक है और इसी दृष्टि से भारत को आगे बढ़ना होगा।

भागवत ने यह भी स्पष्ट किया कि विश्वगुरु की भूमिका अपने आप नहीं मिल जाती, बल्कि इसके लिए निरंतर, ईमानदार और कठोर परिश्रम आवश्यक है। उन्होंने कहा कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक सकारात्मक धाराएं पहले से सक्रिय हैं, जो भारत को इस दिशा में आगे ले जा रही हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक प्रयासों के माध्यम से इसी लक्ष्य की ओर काम कर रहा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह कार्य किसी एक संगठन या व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे समाज का सामूहिक दायित्व है।

संघ प्रमुख ने अपने भाषण में बीसवीं शताब्दी के महान आध्यात्मिक विचारक योगी अरविंद का उल्लेख करते हुए कहा कि सनातन धर्म के पुनरुत्थान की कल्पना कोई नई नहीं है। उन्होंने कहा कि योगी अरविंद ने एक सदी पहले ही यह घोषणा की थी कि सनातन धर्म का पुनर्जागरण ईश्वर की इच्छा है और हिंदू राष्ट्र का उदय इसी व्यापक प्रक्रिया का हिस्सा है। भागवत के अनुसार, वह प्रक्रिया आज साकार होती दिखाई दे रही है और अब समय आ गया है कि समाज इसे केवल विचार के स्तर पर नहीं, बल्कि व्यवहार में भी उतारे। उन्होंने कहा कि संघ का मूल उद्देश्य हिंदू समाज को संगठित करना है, न कि किसी के खिलाफ खड़ा होना। भारत और विदेशों में संघ से जुड़े विभिन्न संगठन एक साझा लक्ष्य के साथ कार्य कर रहे हैं, ताकि समाज में अनुशासन, नैतिकता और सांस्कृतिक चेतना को मजबूत किया जा सके। भागवत ने कहा कि संघ व्यक्तित्व निर्माण को अत्यंत महत्वपूर्ण मानता है, क्योंकि सशक्त और संस्कारवान व्यक्ति ही सशक्त समाज और राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। स्वयंसेवकों को समाज के हर क्षेत्र में सक्रिय रहकर सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बनना चाहिए।

तकनीक और आधुनिक युग की चुनौतियों पर बात करते हुए मोहन भागवत ने कहा कि आने वाले समय में सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव और अधिक बढ़ेगा। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि तकनीक मानवता की सेवक बने, मालिक नहीं। यदि तकनीक पर मानवीय विवेक और नैतिक नियंत्रण नहीं रहा, तो वह समाज के लिए संकट का कारण बन सकती है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मानव बुद्धि, विज्ञान और तकनीक का उपयोग केवल भौतिक प्रगति के लिए नहीं, बल्कि विश्व कल्याण और मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए होना चाहिए। अपने संबोधन के अंत में भागवत ने कहा कि भारत का वैश्विक नेतृत्व भाषणों, घोषणाओं या नारों से नहीं बनेगा, बल्कि आचरण से बनेगा। जब भारत अपने जीवन मूल्यों, संयम, सहिष्णुता और करुणा को व्यवहार में उतारेगा, तभी दुनिया स्वाभाविक रूप से उसकी ओर देखेगी। उन्होंने कहा कि भारत को ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करना होगा, जिससे विश्व यह महसूस करे कि शक्ति नहीं, बल्कि संस्कार ही स्थायी नेतृत्व का आधार होते हैं। इसी आचरण के बल पर भारत मानवता को दिशा दे सकता है और यही उसकी ऐतिहासिक भूमिका भी है।

देश में होलिस्टिक व्यू के साथ हेल्थ इकोसिस्टम का निर्माण हो रहा है : केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह

-:केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह:-

- विकसित भारत के संकल्प में हेल्दी डेमोग्राफी के लिए चिकित्सकों की महत्वपूर्ण भूमिका
- चिकित्सकों का फोकस इलनेस की बजाय वेलनेस पर होना चाहिए
- देश का स्वास्थ्य बजट वर्ष 2013-14 में 37,000 करोड़ रुपए से बढ़ाकर आज 1,28,000 करोड़ रुपए किया गया
- समय के साथ चिकित्सा क्षेत्र के एथिक्स को रिडिफाइन करना आवश्यक टेलीमेडिसिन तथा वीडियो काउंसलिंग में आईएमए के चिकित्सकों से सहयोग की अपेक्षा

-:मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल:-

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में स्वास्थ्य क्षेत्र में अद्यतन सुविधाएं, हेल्थकेयर के लिए लेटेस्ट टेक्नॉलोजी तथा अनेक मॉडर्न इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास से स्वास्थ्य सेवाएं अधिक सज्ज बनी हैं
- आईएमए नैटकॉन-2025 की थीम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा केंद्रीय मंत्री श्री अमित शाह के 'हेल्थकेयर एंड वेलबीइंग फॉर ऑल' के विचार के अनुरूप है
- इंडियन मेडिकल एसोसिएशन केवल एक व्यावसायिक संगठन नहीं, बल्कि राष्ट्र के स्वास्थ्य संरक्षण का प्लेटफॉर्म बन गया है

▸▸ इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के नव-निर्वाचित पदाधिकारियों के शपथ ग्रहण समारोह में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह व मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रेरक उपस्थिति

▸▸ आईएमए के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में डॉ. अनिल नायक ने शपथ ग्रहण की

▸▸ आईएमए द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में देशभर के पांच हजार से अधिक चिकित्सकों ने भाग लिया

(जीएनएस)। गांधीनगर : केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रेरक उपस्थिति में रविवार को इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के नव-निर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह अहमदाबाद में आयोजित किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की शताब्दी के उपलक्ष्य में सभी को शुभकामनाएं दीं और कहा कि देश में होलिस्टिक व्यू के साथ हेल्थ इकोसिस्टम का निर्माण हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में स्वच्छता मिशन, फिट इंडिया मूवमेंट, खेलो इंडिया, योग दिवस का आयोजन, आयुष्मान भारत योजना, आभा और इंद्रधनुष अभियान, जेनेरिक दवाओं को प्रोत्साहन, साथ ही टेलीमेडिसिन और वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से मार्गदर्शन जैसे प्रयास किए गए हैं। उन्होंने जोड़ा कि देश में हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए 1,65,000 करोड़ रुपए आवंटित किए गए हैं। देश का स्वास्थ्य बजट वर्ष 2013-14 में 37,000 करोड़ रुपए से बढ़ाकर आज 1,28,000 करोड़ रुपए किया गया है, जिससे स्वास्थ्य क्षेत्र में कई सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं।

केंद्रीय मंत्री ने आगे कहा कि विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए हेल्दी डेमोग्राफी आवश्यक है और इसमें चिकित्सकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि चिकित्सकों को बीमारी की बजाय वेलनेस पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

कोरोना काल में देशभर के चिकित्सकों द्वारा दी गई सेवाओं की हृदय से सराहना करते हुए केंद्रीय मंत्री ने आयुष्मान भारत योजना और जेनेरिक दवाओं के प्रति चिकित्सकों द्वारा सकारात्मक वातावरण तैयार करने की अपेक्षा व्यक्त की।

उन्होंने कहा कि बदलते समय के साथ चिकित्सा क्षेत्र के एथिक्स के मानकों को भी पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन जैसी संस्थाओं को मेडिकल एथिक्स को रिडिफाइन करने के प्रयास करने चाहिए। मेडिकल कॉलेजों में भावी डॉक्टरों को एथिक्स की समझ के साथ तैयार कर देश को अच्छे डॉक्टर मिलें, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आईएमए द्वारा की जा रही सेवाकीय गतिविधियों की सराहना की और आईएमए से जुड़े चिकित्सकों से टेलीमेडिसिन तथा वीडियो काउंसलिंग जैसी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी की अपील की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि एसोसिएशन चिकित्सकों की मांगों को प्रस्तुत करने के साथ-साथ देश के स्वास्थ्य क्षेत्र को और अधिक मजबूत बनाने में भी योगदान देगा।

श्री अमित शाह ने नव-निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल नायक को ऊर्जावान बताते हुए शुभकामनाएं व्यक्त कीं कि उनके नेतृत्व में एसोसिएशन को नई ऊर्जा और गति मिलेगी।

-:मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल:-

इस अवसर पर मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले एक दशक में स्वास्थ्य क्षेत्र में अद्यतन सुविधाओं, हेल्थकेयर के लिए लेटेस्ट टेक्नॉलोजी तथा अनेक मॉडर्न इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास से स्वास्थ्य सेवाएं अधिक सुदृढ़ हुई हैं। देश में एम्स, मेडिकल कॉलेजों और सुपर स्पेशलिटी अस्पतालों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि गुजरात सरकार ने भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय मंत्री श्री अमित के मार्गदर्शन में स्वास्थ्य और मेडिकल शिक्षा पर विशेष जोर दिया है। जब श्री नरेन्द्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री बने थे, तब राज्य में केवल 1,175 मेडिकल सीटें थीं, जबकि आज जिलेवार मेडिकल कॉलेजों की योजना से हर वर्ष 7000 से अधिक डॉक्टर तैयार हो रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत के मेडिकल शिक्षा क्षेत्र में आमूल परिवर्तन हुए हैं। वर्ष 2014 से पहले देश में 387 मेडिकल कॉलेज थे, जिनमें 88 प्रतिशत वृद्धि के साथ आज यह संख्या 731 हो गई है। इसके अतिरिक्त उन्होंने जोड़ा कि एमबीबीएस सीटों में 118 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 2014 में मेडिकल 51 हजार थी, जो आज बढ़कर एक लाख बारह हजार से पार हो गई हैं। पीजी सीटों में 133 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 31 हजार से अभी 72 हजार हो गई हैं।

प्रधानमंत्री के वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को साकार करने हेतु गुजरात द्वारा किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि गुजरात सरकार ने 'विकसित गुजरात @2047' का रोडमैप तैयार किया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस रोडमैप अंतर्गत वर्ष 2024 तक 100 प्रतिशत यूनिवर्सल हेल्थकेयर कवरेज, एनीमिया और कुपोषण के उन्मूलन जैसे लक्ष्यों के साथ एक स्वस्थ समाज के निर्माण का संकल्प लिया गया है। स्वस्थ और विकसित गुजरात के माध्यम से सशक्त एवं समृद्ध विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में मेडिकल क्षेत्र भी अग्रणी भूमिका निभाएगा।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि इस वर्ष देशभर में सरदार पटेल और भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती तथा 'वंदे मातरम्' की रचना के 150 वर्ष पूरे होने के साथ-साथ ऑल इंडिया मेडिकल कॉन्फ्रेंस और एसोसिएशन की शताब्दी भी मनाई जा रही है। ऐसे में यह उत्सव आप सभी के लिए डबल बोनांजा जैसा है। उन्होंने कहा कि एक शताब्दी से भी अधिक समय से इंडियन मेडिकल एसोसिएशन देश के स्वास्थ्य क्षेत्र का मार्गदर्शन कर रहा है। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन केवल एक व्यावसायिक संगठन ही नहीं, बल्कि राष्ट्र के स्वास्थ्य संरक्षण का एक सशक्त मंच बन चुका है।

आईएमए नैटकॉन-2025 की थीम पर बात करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इस सम्मेलन की थीम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के 'हेल्थकेयर एंड वेलबीइंग फॉर ऑल' के विचार के अनुरूप है। उन्होंने कहा कि 'सर्विस, साइंस और सिनर्जी' की शताब्दी के ध्येय मंत्र के साथ आप सभी एकत्र हुए हैं, यह अभिनंदनीय है। सम्मेलन में होने वाले विचार-विमर्श देश के स्वास्थ्य उपचार क्षेत्र को नई दिशा प्रदान करेंगे।

मुख्यमंत्री ने आईएमए के नए अध्यक्ष डॉ. अनिल नायक और उनकी टीम को शुभकामनाएं दीं तथा आशा व्यक्त की कि नई टीम 'नेशन फर्स्ट, पेशेंट फर्स्ट' के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ेगी।

इस अवसर पर आईएमए के चीफ पैट्रन और पूर्व अध्यक्ष श्री केतन देसाई ने संस्था की शताब्दी के उपलक्ष्य में सभी को शुभकामनाएं दीं और कहा कि यह संस्था सम्पूर्णतः लोकतांत्रिक तरीके से और सभी के सहयोग से संचालित होती है। डॉ. देसाई ने देशभर में हेल्थ केयर सेक्टर में हो रहे व्यापक और मूलभूत परिवर्तनों पर प्रकाश डाला। उन्होंने नव-निर्वाचित डॉ. अनिल नायक के संघर्ष की सराहना करते हुए उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दीं।

डॉ. अनिल जे. नायक ने आईएमए के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में शपथ ग्रहण की और अपने पहले अध्यक्षीय संबोधन में सभी का आभार व्यक्त करते हुए सरकार के समक्ष अपेक्षाएं रखीं।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों के करकमलों द्वारा '100 स्टेप्स फॉर हेल्दी लाइफ' का विमोचन किया गया। साथ ही वर्ल्ड रिकॉर्ड का प्रमाणपत्र भी प्रदान किया गया।

इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. दिलीप भानुशाली, सेक्रेटरी जनरल सुश्री सर्वरी दत्ता, डॉ. पीयूष जैन, डॉ. अनिल पटेल, डॉ. मेहुल शाह सहित एसोसिएशन के वरिष्ठ पैट्रन्स, पदाधिकारी और बड़ी संख्या में चिकित्सक उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि आईएमए द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में देशभर से पांच हजार से अधिक चिकित्सकों ने सहभागिता की।

यूक्रेन को पुतिन की दो टूक चेतावनी, शांति वार्ता ठहरी तो सैन्य ताकत से पूरे होंगे रूस के लक्ष्य

(जीएनएस)। मॉस्को/कीव। यूक्रेन युद्ध को लेकर रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने एक बार फिर बेहद सख्त और स्पष्ट रुख अपनाते हुए कहा है कि यदि यूक्रेन शांति समझौते की दिशा में गंभीरता नहीं दिखाता, तो रूस अपने सभी रणनीतिक और सैन्य लक्ष्य बल प्रयोग के जरिए हासिल करेगा। पुतिन के इस बयान ने न सिर्फ युद्धग्रस्त क्षेत्र में तनाव और बढ़ा दिया है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में भी नई हलचल पैदा कर दी है। रूस का यह संदेश ऐसे वक्त में सामने आया है, जब यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की अमेरिका दौरे पर हैं और उनकी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से अहम मुलाकात होने वाली है।

पुतिन ने अपने बयान में आरोप लगाया कि यूक्रेन जानबूझकर शांति वार्ता को टाल रहा है और बातचीत को लेकर किसी तरह की तत्परता नहीं दिखा रहा। उन्होंने कहा कि रूस ने कई बार संकेत दिए कि संघर्ष को राजनीतिक और कूटनीतिक रास्ते से सुलझाया जा सकता है, लेकिन कीव की ओर से ठोस पहल न होने के कारण अब सैन्य कार्रवाई ही एकमात्र विकल्प बचती जा रही है। पुतिन ने यह भी कहा कि रूस अपने राष्ट्रीय हितों और सुरक्षा से किसी भी सूरत में समझौता नहीं करेगा और जरूरत पड़ी तो सैन्य ताकत का पूरा इस्तेमाल करेगा।

पुतिन का यह बयान ऐसे समय आया है, जब हाल के दिनों में रूस ने यूक्रेन पर बड़े पैमाने पर ड्रोन और मिसाइल हमले तेज कर दिए हैं। इन हमलों के बाद यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने रूस पर सीधा आरोप लगाते हुए कहा कि मॉस्को शांति नहीं चाहता, बल्कि युद्ध को लंबा खींचने की रणनीति पर काम कर रहा है। जेलेंस्की ने कहा कि यूक्रेन लगातार युद्धविराम और कूटनीतिक समाधान की बात करता रहा है, लेकिन रूस की कार्रवाइयां इसके ठीक उलट हैं।

रूस की ओर से यह भी दावा किया गया है कि उसकी सेना ने यूक्रेन के डोनेत्स्क क्षेत्र में मिर्नोहराद, रोडिन्स्के और आर्टेमिव्का जैसे अहम शहरों पर कब्जा कर लिया है। इसके अलावा जापोरिज्जिया क्षेत्र के हुलियाइपोले और स्टेपनोहिर्स्क कस्बों पर भी नियंत्रण स्थापित करने का दावा किया गया है। रूसी रक्षा मंत्रालय का कहना है कि इन इलाकों में सैन्य अभियान सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है और यूक्रेनी सेना को भारी नुकसान उठाना पड़ा है।

हालांकि, यूक्रेन ने रूस के इन दावों को सिरे से खारिज कर दिया है। यूक्रेनी सशस्त्र सेनाओं के जनरल स्टाफ के अनुसार, मिर्नोहराद और हुलियाइपोले में हालात जरूर चुनौतीपूर्ण हैं, लेकिन वहां अब भी यूक्रेनी सेना मोर्चा संभाले हुए है और रूसी सेना को कड़ा प्रतिरोध मिल रहा है। यूक्रेन के सदर्न कमांड ने भी कहा है कि हुलियाइपोले में भीषण लड़ाई जारी है और शहर का बड़ा हिस्सा अभी यूक्रेन के नियंत्रण में है। इस बीच अमेरिका की भूमिका भी लगातार अहम होती जा रही है। राष्ट्रपति जेलेंस्की ने जानकारी दी है कि अमेरिका ने यूक्रेन को 15 वर्षों की सुरक्षा गारंटी का प्रस्ताव दिया है, जिसे जरूरत पड़ने पर आगे बढ़ाया या नवीनीकरण किया जा सकता है। हालांकि, जेलेंस्की का कहना है कि यूक्रेन के लिए यह अवधि पर्याप्त नहीं है और वह दीर्घकालिक तथा ठोस सुरक्षा गारंटी चाहता है, ताकि भविष्य में रूस की किसी भी संभावित सैन्य कार्रवाई से देश को सुरक्षित रखा जा सके। फ्लोरिडा में होने वाली जेलेंस्की और ट्रंप की मुलाकात को लेकर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की नजरें टिकी हुई हैं। माना जा रहा है कि इस बैठक में युद्ध को समाप्त करने के संभावित विकल्पों, सैन्य सहायता और सुरक्षा गारंटी पर गंभीर चर्चा हो सकती है। हालांकि पुतिन के ताजा बयान ने यह साफ कर दिया है कि रूस फिलहाल दबाव की रणनीति के तहत अपनी सैन्य ताकत का प्रदर्शन जारी रखने के मूड में है।

कुल मिलाकर, यूक्रेन युद्ध एक बार फिर निर्णायक मोड़ की ओर बढ़ता नजर आ रहा है। एक तरफ कूटनीतिक प्रयासों की बात हो रही है, तो दूसरी ओर रूस की सख्त चेतावनी और सैन्य दावों ने शांति की उम्मीदों पर सवाल खड़े कर दिए हैं। आने वाले दिनों में अमेरिका, यूक्रेन और रूस के बीच होने वाली बातचीत और जमीनी हालात तय करेंगे कि यह संघर्ष शांति की ओर बढ़ेगा या और ज्यादा भयावह रूप लेगा।

चीन की सेना में भ्रष्टाचार पर बड़ा प्रहार, शी जिनपिंग के आदेश पर तीन शीर्ष सैन्य अधिकारी पद से हटाए गए, सत्ता और सैन्य ढांचे में मचा भूचाल

(जीएनएस)। बीजिंग। चीन में राष्ट्रपति शी जिनपिंग के नेतृत्व में चल रहा भ्रष्टाचार विरोधी अभियान एक बार फिर सुर्खियों में आ गया है। इस बार कार्रवाई देश की सैन्य व्यवस्था के सबसे ऊंचे स्तर तक पहुंच गई है। भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों के बीच चीन की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार ने तीन बेहद वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों को उनके पदों से हटा दिया है। यह फैसला चीनी संसद नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्थायी समिति की बैठक में लिया गया, जहां सेंट्रल मिलिट्री कमीशन और उससे जुड़े अहम पदों पर बैठे अधिकारियों को निष्कासित करने का निर्णय हुआ। हटाए गए अधिकारियों में वांग रेनहुआ, झांग होंगबिंग और वांग पेंग शामिल हैं, जो सेना और सुरक्षा तंत्र में बेहद प्रभावशाली माने जाते थे।

इस कार्रवाई को राष्ट्रपति शी जिनपिंग की उस सख्त नीति का हिस्सा माना जा रहा है, जिसके तहत वे सेना को पूरी तरह अपने नियंत्रण में रखने और किसी भी तरह के भ्रष्टाचार या सत्ता के समानांतर केंद्र को खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं। शी जिनपिंग लंबे समय से यह कहते आए हैं कि सेना की "राजनीतिक शुद्धता" और "पूर्ण निष्ठा" देश की सुरक्षा के लिए सबसे अहम है। ऐसे में शीर्ष सैन्य अधिकारियों पर कार्रवाई यह साफ संकेत देती है कि अब भ्रष्टाचार के आरोपों में कोई भी पद या रुतबा ढाल नहीं बन सकता।

वांग रेनहुआ सेंट्रल मिलिट्री कमीशन की राजनीतिक और कानूनी मामलों की समिति के प्रमुख थे और सेना के भीतर अनुशासन, सैन्य अदालतों और जेलों की व्यवस्था की जिम्मेदारी उन्हीं के पास थी। उन्हें पिछले साल ही शी जिनपिंग ने एडमिरल के पद पर प्रमोट किया था, जिससे उनकी ताकत और प्रभाव का अंदाजा लगाया जा सकता है। इससे पहले वे गोबी रेगिस्तान स्थित जियुक्वान सैटेलाइट लॉन्च सेंटर में राजनीतिक इकाई के प्रमुख रह चुके थे और 2017 में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी के ईस्ट सी फ्लीट में एंटी-करप्शन अधिकारी के तौर पर भी काम कर चुके थे। ऐसे अधिकारी पर भ्रष्टाचार के आरोप और फिर कार्रवाई, चीन के सैन्य तंत्र के भीतर गहरी जड़ों तक फैली समस्या की ओर इशारा करती है।

झांग होंगबिंग, जिन्हें 2022 में फुल जनरल के पद पर प्रमोट किया गया था, पीपुल्स आर्म्ड पुलिस के राजनीतिक कमिश्नर थे। यह बल चीन में आंतरिक सुरक्षा, दंगों और संवेदनशील अभियानों में अहम भूमिका निभाता है। झांग इससे पहले पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के ईस्टर्न थिएटर कमांड में राजनीतिक कमिश्नर रह चुके हैं, जो ताइवान से जुड़े सैन्य अभियानों और रणनीतिक तैयारियों में बेहद महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जाता है। ऐसे में उनका पद से हटाया जाना न सिर्फ सैन्य बल्कि रणनीतिक दृष्टि से भी बड़ा घटनाक्रम है। तीसरे अधिकारी वांग पेंग, सेंट्रल मिलिट्री कमीशन के ट्रेनिंग और प्रशासन विभाग के निदेशक थे। वे सेना के प्रशिक्षण ढांचे और प्रशासनिक नीतियों की निगरानी करते थे। वांग पेंग को दिसंबर 2021 में लेफ्टिनेंट जनरल बनाया गया था। उन्होंने नानजिंग यूनिवर्सिटी से अर्थशास्त्र की पढ़ाई की थी और इसके बाद सेना में कई अहम जिम्मेदारियां संभालीं। वे ईस्टर्न थिएटर कमांड में डिप्टी चीफ ऑफ स्टाफ और नेशनल डिफेंस यूनिवर्सिटी में शिक्षा निदेशक और उपाध्यक्ष भी रहे। ऐसे अधिकारी पर कार्रवाई यह दिखाती है कि शी जिनपिंग केवल लड़ाकू या ऑपरेशनल यूनिट्स ही नहीं, बल्कि प्रशिक्षण और प्रशासन जैसे अहम क्षेत्रों को भी पूरी तरह साफ करना चाहते हैं। गौर करने वाली बात यह है कि ये तीनों अधिकारी पिछले कई महीनों से सार्वजनिक कार्यक्रमों से गायब थे।

बंगाल की राजनीति में बड़ा मोड़, कांग्रेस ने लेफ्ट से नाता तोड़कर अकेले चुनाव लड़ने का दिया संकेत

(जीएनएस)। कोलकाता। पश्चिम बंगाल की राजनीति में विधानसभा चुनाव से पहले एक बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है। लंबे समय से लेफ्ट पार्टियों के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ती आ रही कांग्रेस ने इस बार अलग राह चुनने का मन बना लिया है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष शुभंकर सरकार के ताजा बयान ने साफ कर दिया है कि कांग्रेस आगामी विधानसभा चुनाव में लेफ्ट के साथ गठबंधन नहीं करेगी और अपने दम पर चुनावी मैदान में उतरेगी। इस फैसले ने न सिर्फ कांग्रेस-लेफ्ट गठबंधन की संभावनाओं पर विराम लगा दिया है, बल्कि राज्य की राजनीति में नए समीकरणों और चौतरफा मुकाबले के संकेत भी दे दिए हैं। शुभंकर सरकार ने अपने बयान में कांग्रेस की मौजूदा स्थिति को पहले से कहीं अधिक मजबूत बताते हुए कहा कि अब पार्टी को किसी सहारे की जरूरत नहीं है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि कांग्रेस अकेले चुनाव लड़ने की क्षमता रखती है और इस बारे में पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व को भी अवगत करा दिया गया है। उनके शब्दों में, गठबंधन की जरूरत तब पड़ती है जब कोई पार्टी कमजोर होती है, लेकिन कांग्रेस अब उस स्थिति में नहीं है। इस बयान के साथ ही कांग्रेस ने यह संदेश देने की कोशिश की है कि वह बंगाल की राजनीति में फिर से खुद को एक स्वतंत्र और प्रभावी ताकत के रूप में स्थापित करना चाहती है।

यह फैसला ऐसे समय पर सामने आया है, जब राज्य में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस, भाजपा, लेफ्ट और कांग्रेस—चारों ही दल चुनावी तैयारियों में जुटे हैं। 2021 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस

और लेफ्ट ने मिलकर चुनाव लड़ा था, लेकिन इसका कोई खास लाभ दोनों दलों को नहीं मिला। तृणमूल कांग्रेस ने ममता बनर्जी के नेतृत्व में एकतरफा जीत दर्ज की थी, जबकि भाजपा ने मुख्य विपक्ष की भूमिका निभाते हुए अपनी मजबूत मौजूदगी दर्ज कराई थी। उस चुनाव के बाद से ही कांग्रेस और लेफ्ट के बीच गठबंधन की उपयोगिता को लेकर सवाल उठते रहे हैं, और अब कांग्रेस के इस फैसले ने उन सवालों को और गहरा कर दिया है। कांग्रेस का मानना है कि लेफ्ट के साथ गठबंधन करने से उसकी स्वतंत्र राजनीतिक पहचान धुंधली पड़ रही थी। पार्टी नेतृत्व का आकलन है कि यदि कांग्रेस अपने दम पर जनता के बीच जाएगी, तो उसे अपनी विचारधारा, संगठन और मुद्दों को ज्यादा स्पष्ट रूप से रखने का मौका मिलेगा। शुभंकर सरकार ने यह भी कहा कि आज की राजनीति में आम लोगों के बुनियादी मुद्दे—रोजगार, महंगाई, आवास और कानून-व्यवस्था—पीछे छूटते जा रहे हैं और सत्ता में बैठी सरकारें धार्मिक ध्रुवीकरण के जरिए इन सवालों से ध्यान भटकाने की कोशिश कर रही हैं। कांग्रेस इन मुद्दों को केंद्र में रखकर चुनाव लड़ना चाहती है।

कांग्रेस के इस रुख के बाद पश्चिम बंगाल में चुनावी मुकाबला और भी दिलचस्प हो सकता है। यदि कांग्रेस, लेफ्ट, तृणमूल कांग्रेस और भाजपा चारों अलग-अलग मैदान में उतरते हैं, तो वोटों का बंटवारा तय माना जा रहा है। इसका सीधा असर चुनावी नतीजों पर पड़ सकता है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि कांग्रेस का अकेले चुनाव लड़ना जहां उसे अपनी खोई हुई जमीन वापस पाने का मौका दे सकता है, वहीं यह फैसला तृणमूल कांग्रेस और भाजपा दोनों के लिए नई रणनीति बनाने की चुनौती भी खड़ी करेगा।

हालांकि कांग्रेस ने लेफ्ट से दूरी बना ली है, लेकिन लेफ्ट पार्टियां पूरी तरह अकेली भी नहीं हैं। इंडियन सेक्युलर फ्रंट (ISF) के साथ उनके संभावित गठबंधन की चर्चाएं तेज हैं। हाल ही में अलीमुद्दीन स्ट्रीट पर लेफ्ट और ISF नेताओं के बीच हुई बैठक ने इन अटकलों को और हवा दी है। इस बैठक में सीट बंटवारे और साझा रणनीति पर चर्चा हुई, जबकि कांग्रेस इसमें शामिल नहीं थी। इससे यह संकेत मिलता है कि बंगाल की राजनीति में नए गठबंधन और नए मोर्चे उभर सकते हैं।

शुभंकर सरकार ने यह भी कहा कि राजनीति में कोई भी समीकरण स्थायी नहीं होता और भविष्य में परिस्थितियों के अनुसार बदलाव संभव हैं। लेकिन फिलहाल कांग्रेस का रुख साफ है कि वह अपने दम पर जनता के बीच जाएगी और खुद को एक मजबूत विकल्प के रूप में पेश करेगी। यह फैसला कांग्रेस के लिए जोखिम भरा भी हो सकता है, लेकिन पार्टी नेतृत्व इसे एक जरूरी राजनीतिक कदम मान रहा है।

कुल मिलाकर, पश्चिम बंगाल में कांग्रेस का यह फैसला आने वाले विधानसभा चुनाव को और ज्यादा रोचक, जटिल और प्रतिस्पर्धी बनाने वाला है। लेफ्ट से अलग होकर कांग्रेस की यह नई रणनीति राज्य की राजनीति में क्या रंग लाएगी, यह तो चुनावी नतीजे ही तय करेंगे, लेकिन इतना तय है कि इस फैसले ने बंगाल की सियासत में हलचल तेज कर दी है और आने वाले दिनों में राजनीतिक बयानबाजी और रणनीतिक चालें और भी तेज होंगी।